facebook.com/ thebharatshri
twitter.com/ thebharatshri
website thebharatshri

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 06 अप्रैल 2026 ● वर्ष 7 ● अंक 38 ● मूल्य: 5 रुपए

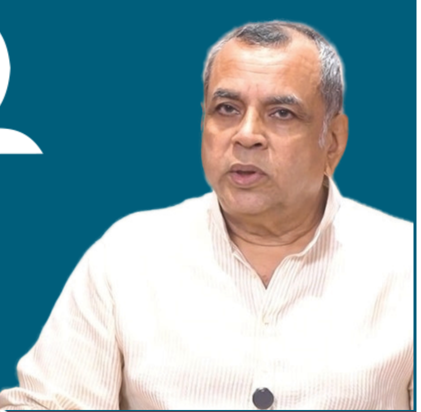

काश मैं भी होता ...

"पार्टी ही हमारी मां है"

स्थापना दिवस पर भावुक हुए PM मोदी, कार्यकर्ताओं के संघर्ष और बलिदान को किया नमन

संघर्ष, सेवा और संकल्प की कहानी-कैसे कार्यकर्ताओं के दम पर खड़ी हुई दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक ताकत

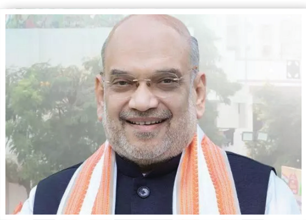

भाजपा आज जिस ऊंचाई पर पहुंची है, वह किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि करोड़ों कार्यकर्ताओं की तपस्या और समर्पण का परिणाम है। हमारे लिए सत्ता साध्य नहीं, बल्कि राष्ट्र सेवा का एक माध्यम है।

अमित शाह (केंद्रीय गृह मंत्री)

भाजपा की ताकत उसके कार्यकर्ता हैं, जो विचारधारा को सिर्फ मानते नहीं, बल्कि उसे अपने जीवन में जीते हैं। यही कारण है कि पार्टी हर चुनौती के बीच और मजबूत होकर उभरती है।

राजनाथ सिंह (रक्षा मंत्री)

- 1984 में सिर्फ 2 सीटों से शुरू हुआ सफर, आज भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी सदस्यता वाली पार्टी बन चुकी है।
- भाजपा का संगठन मॉडल कैडर-आधारित है, जिसमें जमीनी कार्यकर्ता चुनावी सफलता की असली रीढ़ माने जाते हैं।
- आपातकाल (1975-77) के दौरान हुए दमन ने वैकल्पिक राजनीति की जमीन तैयार की, जिससे भाजपा जैसी विचारधारा को मजबूती मिली।
- तीन तलाक, आरक्षण और नए संसद भवन जैसे फैसले पर फोकस।

@ भारतश्री ब्यूरो

भारतीय जनता पार्टी का स्थापना दिवस इस बार सिर्फ एक औपचारिक आयोजन नहीं रहा, बल्कि यह एक भावनात्मक संवाद में बदल गया। जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया, तो उनके शब्दों में केवल राजनीति नहीं, बल्कि एक गहरी आत्मीयता और जुड़ाव महसूस हुआ।उन्होंने कहा कि भाजपा एकमात्र ऐसा राजनीतिक दल है, जहां हम पार्टी को अपनी मां मानते हैं।" यह वाक्य केवल एक बयान नहीं था, बल्कि उस सोच का प्रतिबिंब था, जिसने लाखों कार्यकर्ताओं को एक सूत्र में बांध रखा है।मोदी के इस संबोधन में बार-बार यह बात उभरकर सामने आई कि भाजपा का निर्माण केवल सत्ता पाने के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र सेवा के संकल्प के साथ हुआ है। यही कारण है कि स्थापना दिवस कार्यकर्ताओं के लिए एक उत्सव के साथ-साथ आत्ममंथन का भी अवसर बन जाता है।

संघर्ष की उस विरासत को याद करना जरूरी है

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में उन दिनों को याद किया, जब भाजपा का सफर आसान नहीं था। उन्होंने कहा कि पार्टी के कार्यकर्ताओं ने हर मुश्किल का सामना किया। चाहे वह आपातकाल का दौर हो या कांग्रेस के शासनकाल में दमन।उन्होंने पश्चिम बंगाल का जिक्र करते हुए कहा कि वहां राजनीतिक हिंसा को एक संस्कृति बना दिया गया है, लेकिन इसके बावजूद भाजपा के कार्यकर्ता डटे रहे।यह बयान सिर्फ एक राजनीतिक आरोप नहीं था, बल्कि उन कार्यकर्ताओं के लिए एक सम्मान भी था, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी अपने विश्वास को नहीं छोड़ा।

जब राजनीति सेवा बन जाती है

मोदी ने एक अहम बात कही भारत की राजनीति में दो विचारधाराएं हमेशा रही हैं। एक सत्ता के लिए राजनीति करने वालों की, और दूसरी सेवा के लिए राजनीति करने वालों की।उनका संकेत साफ था कि भाजपा खुद को दूसरी श्रेणी में रखती है। उन्होंने कहा कि पार्टी के कार्यकर्ताओं ने हमेशा जनता से जुड़े मुद्दों को प्राथमिकता दी और इसी कारण लोगों का भरोसा धीरे-धीरे बढ़ता गया।यह विचार आज के दौर में खास मायने रखता है, जब राजनीति अक्सर आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित हो जाती है।

1984 से आज तक - एक लंबा सफर

प्रधानमंत्री ने 1984 के उस दौर को भी याद किया, जब कांग्रेस ने रिकॉर्ड जीत हासिल की थी। उस समय भाजपा बहुत छोटी ताकत थी। लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि लोगों ने धीरे-धीरे कांग्रेस की नीतियों से निराश होकर भाजपा की ओर रुख किया। यह बदलाव रातों-रात नहीं हुआ, बल्कि वर्षों की मेहनत और विश्वास का परिणाम था।आज भाजपा जिस मुकाम पर है, वह उसी लंबी यात्रा का नतीजा है, जिसमें हजारों कार्यकर्ताओं का योगदान शामिल है।

नीतियों और फैसलों की झलक

अपने संबोधन में मोदी ने उन प्रमुख फैसलों का भी जिक्र किया, जिन्हें वह भाजपा की उपलब्धियों के रूप में देखते हैं।उन्होंने कहा कि अंग्रेजों के समय के कई पुराने कानूनों को खत्म किया गया, नया संसद भवन बनाया गया, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण लागू किया गया।इसके अलावा तीन तलाक पर कानून, नागरिकता संशोधन कानून और अयोध्या में राम मंदिर निर्माण जैसे मुद्दों को भी उन्होंने पार्टी के संकल्प का हिस्सा बताया।इन उदाहरणों के जरिए उन्होंने यह संदेश देने की कोशिश की कि भाजपा केवल वादे नहीं करती, बल्कि उन्हें पूरा करने का प्रयास भी करती है।

बड़े मुद्दों पर चर्चा

प्रधानमंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि पार्टी का मिशन अभी पूरा नहीं हुआ है। उन्होंने समान नागरिक संहिता और एक देश-एक चुनाव जैसे मुद्दों का जिक्र किया।उन्होंने कहा कि इन विषयों पर देश में गंभीर चर्चा चल रही है और भाजपा इन पर आगे बढ़ने के लिए प्रतिबद्ध है।

आरएसएस से मिली प्रेरणा

मोदी ने अपने संबोधन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका को भी याद किया। उन्होंने कहा कि संघ से उन्हें शुद्ध इरादों और ईमानदारी के साथ राजनीति में काम करने की प्रेरणा मिली।उन्होंने संघ को एक "विशाल और पवित्र बरगद का पेड़" बताया, जिसकी छांव में भाजपा ने अपने शुरुआती कदम रखे।यह बयान भाजपा और संघ के वैचारिक संबंधों को एक बार फिर स्पष्ट करता है।प्रधानमंत्री के पूरे भाषण में अगर कोई बात सबसे ज्यादा उभरकर सामने आई, तो वह थी कार्यकर्ताओं की भूमिका।उन्होंने कहा कि भाजपा का हर कार्यकर्ता सिर्फ एक सदस्य नहीं, बल्कि एक मिशन का हिस्सा है। यही कारण है कि कई कार्यकर्ताओं ने अपने जीवन तक का बलिदान दिया।उन्होंने यह भी कहा कि कार्यकर्ताओं ने कभी अपने मूल्यों से समझौता नहीं किया, चाहे परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों न रही हों।

MN DIVINE
ORDER ALL TYPES OF :
• POOJA SAMAGRI,
• AYURVEDIC MEDICINE
• AND PRATIMA.
NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM
ORDER NOW
https://mndivine.com/
HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)

खुद अपनी पैरवी करते दिखे केजरीवाल

अदालत में तीखी बहस के बीच टली सुनवाई-दिल्ली की सियासत और सिस्टम पर उठे कई सवाल

@ रिंकू विश्वकर्मा

दिल्ली की राजनीति और अदालत, दोनों का ध्यान सोमवार को एक ही जगह केंद्रित था दिल्ली हाई कोर्ट। पूर्व मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल कथित आबकारी नीति से जुड़े मामले में सुनवाई के लिए खुद अदालत पहुंचे, लेकिन इस बार मामला सिर्फ कानूनी बहस तक सीमित नहीं रहा। यह एक ऐसा दिन बन गया, जहां कानून, राजनीति और व्यक्तिगत भरोसे की लड़ाई एक साथ दिखाई दी।सुबह से ही अदालत परिसर में हलचल थी। केजरीवाल के खुद अपनी पैरवी करने की खबर ने पहले ही माहौल को असामान्य बना दिया था। आमतौर पर बड़े राजनीतिक मामलों में वरिष्ठ वकील सामने होते हैं, लेकिन यहां तस्वीर अलग थी। एक पूर्व मुख्यमंत्री खुद अपने केस की दलील रखने के लिए अदालत पहुंचे थे।

कोर्ट पहुंचने से पहले ही बन गया था माहौल

करीब साढ़े ग्यारह बजे के आसपास केजरीवाल अदालत के लिए निकले। उनके इस फैसले की तुलना कुछ लोग पहले के उन मामलों से कर रहे थे, जब बड़े नेता खुद अदालत में अपनी बात रखने पहुंचे थे। यह कदम राजनीतिक संदेश भी दे रहा था और व्यक्तिगत आत्मविश्वास भी दिखा रहा था।दोपहर तक वे अपनी पत्नी सुनीता केजरीवाल के साथ अदालत परिसर में मौजूद थे। दोनों पहली कतार में बैठे नजर आए। इस दृश्य में एक अलग ही मानवीय पहलू दिख रहा था। राजनीतिक हलचल से दूर, एक परिवार अपने सबसे कठिन समय में साथ खड़ा था।

लंच के बाद शुरू हुई असली बहस

दोपहर के बाद जैसे ही कार्यवाही शुरू हुई, माहौल अचानक गंभीर हो गया। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने केजरीवाल के खुद केस लड़ने पर आपत्ति जताई।उन्होंने अदालत से कहा कि यह उनकी याचिका है और इस तरह की प्रक्रिया को स्पष्ट होना चाहिए। उनका कहना था कि एक ही समय पर खुद भी दलील देना और वकील भी रखना, यह उचित नहीं है। उन्होंने यह भी टिप्पणी की कि कुछ लोगों ने आरोप लगाकर अपना करियर बनाया है, जो सीधे तौर पर केजरीवाल पर निशाना माना गया।अदालत में कुछ पल के लिए सन्नाटा सा छा गया। यह सिर्फ कानूनी बहस नहीं रह गई थी, बल्कि इसमें तीखापन भी साफ महसूस हो रहा था।

केजरीवाल का सीधा जवाब

केजरीवाल ने अपनी बात साफ शब्दों में रखी वह खुद अपना केस लड़ना चाहते हैं। उनके इस रुख में एक तरह का आत्मविश्वास भी था और चुनौती भी।उनका कहना था कि यह उनका अधिकार है और वह अपनी बात खुद अदालत के सामने रखना चाहते हैं। इस पूरे घटनाक्रम में उनकी भाषा अपेक्षाकृत शांत रही, लेकिन संदेश स्पष्ट था कि वह इस लड़ाई को व्यक्तिगत रूप से भी लड़ने को तैयार हैं।

न्यायालय का संतुलित रुख

सुनवाई कर रहीं जस्टिस ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनीं। माहौल को देखते हुए उन्होंने मामले को अगले सप्ताह तक के लिए टाल दिया।अब इस केस की अगली सुनवाई सोमवार को दोपहर ढाई बजे होगी। अदालत ने केजरीवाल की उस अर्जी को भी रिकॉर्ड पर लिया, जिसमें उन्होंने इस मामले को दूसरी पीठ में स्थानांतरित करने की मांग की है।यह फैसला फिलहाल स्थिति को शांत करने वाला माना जा रहा है, लेकिन असली बहस अभी बाकी है।

कैसे पहुंचा मामला यहां तक

यह पूरा विवाद दिल्ली की आबकारी नीति से जुड़ा हुआ है। जांच एजेंसियों का आरोप है कि इस नीति में अनियमितताएं हुईं। हालांकि निचली अदालत ने पहले केजरीवाल को समन की कथित अवहेलना के मामले में बरी कर दिया था।राउज एवेन्यू कोर्ट ने अपने आदेश में कहा था कि प्रवर्तन निदेशालय यह साबित नहीं कर सका कि केजरीवाल ने जानबूझकर समन की अवहेलना की।इसके बाद केंद्रीय जांच एजेंसी ने इस फैसले को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय का रुख किया। अब वही मामला यहां सुनवाई के लिए आया है।

दिल्ली में बदला मौसम, लेकिन सियासत का ताप बरकरार

जिस दिन अदालत में यह सुनवाई चल रही थी, उसी दिन दिल्ली-एनसीआर का मौसम भी अचानक बदल गया। सुबह तेज धूप थी, लेकिन दोपहर तक बादल छा गए और शाम होते-होते कई इलाकों में बारिश शुरू हो गई।यह मौसम का बदलाव जैसे उस दिन की घटनाओं का प्रतीक लग रहा था एक तरफ शांति, दूसरी तरफ अचानक बढ़ता तनाव।

- अदालत में वकील नहीं, खुद केजरीवाल बने अपनी आवाज।
- कानूनी लड़ाई या सियासी संदेश-कोर्ट में दिखा दोहरा मंजर।
- एक तरफ कानून की दलीलें, दूसरी तरफ राजनीतिक टकराव।
- सुनवाई टली, लेकिन बहस और सवाल दोनों तेज हो गए।
- यह सिर्फ केस नहीं, केजरीवाल की साख की भी परीक्षा है।

विधानसभा में सुरक्षा चूक ने बढ़ाई चिंता

इसी दिन एक और घटना ने दिल्ली की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए। दिल्ली विधानसभा परिसर में एक अज्ञात कार मुख्य गेट तोड़कर अंदर घुस गई और एक संदिग्ध वस्तु रख दी।हालांकि पुलिस जांच में जुटी है, लेकिन इस घटना ने सुरक्षा व्यवस्था को लेकर गंभीर चिंताएं खड़ी कर दी हैं। ऐसे समय में जब राजधानी पहले ही राजनीतिक और कानूनी हलचल के दौर से गुजर रही है, यह घटना और भी संवेदनशील हो जाती है।इसी बीच दिल्ली शिक्षा निदेशालय ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग और वंचित समूह के बच्चों के लिए स्कूलों में दाखिले का परिणाम भी जारी कर दिया।यह खबर उन हजारों परिवारों के लिए राहत लेकर आई, जो अपने बच्चों के बेहतर भविष्य का इंतजार कर रहे थे। यह याद दिलाती है कि तमाम राजनीतिक और कानूनी हलचलों के बीच भी शहर की जिंदगी अपनी रफ्तार से चलती रहती है।

राजनीति और अदालत के बीच की महीन रेखा

केजरीवाल का खुद अपनी पैरवी करना सिर्फ एक कानूनी कदम नहीं है। इसके राजनीतिक मायने भी निकाले जा रहे हैं।कुछ लोग इसे आत्मविश्वास का संकेत मान रहे हैं, तो कुछ इसे एक रणनीतिक कदम बता रहे हैं। सवाल यह भी है कि क्या यह तरीका आगे चलकर दूसरे नेताओं के लिए भी एक मिसाल बनेगा?अदालत के बाहर खड़े लोगों से बात करने पर एक अलग ही तस्वीर सामने आती है। कुछ लोग केजरीवाल के इस कदम को साहसिक मानते हैं, तो कुछ इसे जोखिम भरा।अब सबकी नजर अगली सुनवाई पर टिकी है। क्या केजरीवाल अपनी बात पूरी तरह रख पाएंगे? क्या अदालत उनकी मांग पर विचार करेगी? और सबसे बड़ा सवाल-इस मामले का अंतिम निष्कर्ष क्या होगा?

यह दिन सिर्फ एक सुनवाई का दिन नहीं था। इसमें कई परतें थीं-कानून, राजनीति, व्यक्तिगत निर्णय, और सार्वजनिक प्रतिक्रिया।एक तरफ अदालत में चल रही बहस थी, दूसरी तरफ दिल्ली की सड़कों पर बदलता मौसम, और तीसरी तरफ आम लोगों की जिंदगी।केजरीवाल का अदालत में खुद अपनी पैरवी करना एक असामान्य घटना जरूर है, लेकिन यह इस बात का संकेत भी है कि यह मामला अब केवल कानूनी नहीं रहा।यह एक ऐसी कहानी बन चुका है, जिसमें हर दिन एक नया मोड़ आ रहा है।अभी सुनवाई टली है, फैसला नहीं आया।और जब तक फैसला नहीं आता, तब तक यह सवाल बना रहेगा-क्या यह कदम केजरीवाल के लिए मजबूत साबित होगा या फिर यह उनके लिए एक नई चुनौती बन जाएगा?

दिल्ली के स्कूलों के लिए EWS/DG कैटेगरी का रिजल्ट जारी

दिल्ली शिक्षा निदेशालय (DoE) ने आज, 6 अप्रैल 2026 को एकेडमिक सेशन 2026-27 के लिए आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS), वंचित समूह (DG) और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) की कैटेगरी का पहला कम्प्यूटरीकृत ड्रा (Lottery Result) जारी कर दिया है. दिल्ली के निजी स्कूलों में एंट्री-लेवल कक्षाओं (नर्सरी, केजी और कक्षा 1) में दाखिले का इंतजार कर रहे हजारों अभिभावकों के लिए यह बड़ी खबर है।

दिल्ली में 1.20 लाख नकली गोलियों का जखीरा बरामद!

दिल्ली पुलिस और ड्रग कंट्रोल विभाग ने एक संयुक्त ऑपरेशन में उस 'मौत के सिंडिकेट' का भंडाफोड़ किया है जो लोगों की रगों में दवा के नाम पर जहर घोल रहा था। पुलिस ने निखिल अरोड़ा समेत 6 मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जो दिल्ली के ऐतिहासिक भागीरथ पैलेस मार्केट की आड़ में नकली दवाओं का साम्राज्य चला रहे थे।दिल्ली पुलिस और ड्रग कंट्रोल विभाग ने एक संयुक्त ऑपरेशन में उस 'मौत के सिंडिकेट' का भंडाफोड़ किया है जो लोगों की रगों में दवा के नाम पर जहर घोल रहा था।

होर्मुज की चाबी खो गई...

तंज, धमकियां और जंग की आहट के बीच दुनिया की सांसें अटकीं

- ‘चाबी खो गई’-एक तंज, जिसने दुनिया की टेंशन बढ़ा दी।
- धमकी अमेरिका की, जवाब ईरान का-बीच में अटकी पूरी दुनिया।
- तेल की नस पर खड़ा टकराव, असर हर देश की जेब पर।
- बयानबाजी तेज, कूटनीति कमजोर-जंग का खतरा बरकरार।
- होर्मुज बंद तो दुनिया ठप-यही है असली डर।

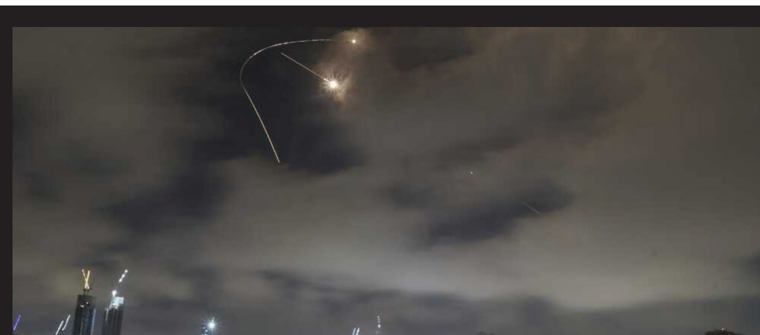

@ शोभित यादव

दुनिया के नक्शे पर कुछ जगहें ऐसी होती हैं, जिनका महत्व सिर्फ भौगोलिक नहीं होता-वे पूरी दुनिया की धड़कनों को नियंत्रित करती हैं। ऐसी ही एक जगह है इन दिनों यही समुद्री रास्ता वैश्विक तनाव का केंद्र बना हुआ है।जब डोनाल्ड ट्रम्प ने ईरान को सख्त चेतावनी दी कि होर्मुज को तुरंत खोलो, वरना गंभीर सैन्य कार्रवाई होगी—तो यह सिर्फ एक कूटनीतिक बयान नहीं था, बल्कि एक संभावित टकराव का संकेत था।लेकिन इसके जवाब में ईरान ने जो कहा, उसने माहौल को और भी दिलचस्प और गंभीर बना दिया कि होर्मुज की चाबी खो गई है।यह एक तंज था, लेकिन इसके पीछे छिपा संदेश बहुत गहरा था।

तंज के पीछे की रणनीति

ईरान ने सीधे जवाब देने के बजाय व्यंग्य का सहारा लिया। जिम्बाब्वे में स्थित उसके दूतावास ने सोशल मीडिया पर यह टिप्पणी की, मानो पूरी दुनिया को यह बता रहा हो कि वह दबाव में आने वाला नहीं है।दक्षिण अफ्रीका में ईरानी दूतावास ने भी इसी अंदाज में कहा-चाबी फूलदान के नीचे है, दोस्तों के लिए रास्ता खुला है।यह सिर्फ मजाक नहीं था। यह एक कूटनीतिक भाषा थी, जिसमें संदेश साफ था-ईरान अपनी शर्तों पर ही बात करेगा।

शब्दों से आगे की आहट

डोनाल्ड ट्रम्प के बयान में इस बार आक्रामकता साफ दिखी। उन्होंने सिर्फ चेतावनी नहीं दी, बल्कि सीधे-सीधे हमले की बात की—पावर प्लांट, पुल और बुनियादी ढांचे को निशाना बनाने की धमकी।उन्होंने यहां तक कहा कि अगर ईरान ने रास्ता नहीं खोला, तो उसे नरक बना दिया जाएगा।यह बयान अंतरराष्ट्रीय राजनीति में हलचल मचाने के लिए काफी था। क्योंकि इस तरह के हमले केवल सैन्य कार्रवाई नहीं होते, बल्कि पूरे देश की आम जनता को प्रभावित करते हैं।

यह युद्ध अपराध होगा

ईरान ने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया दी। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने इसे अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन बताया।उन्होंने कहा कि किसी देश के बुनियादी ढांचे पर हमला करना युद्ध अपराध की श्रेणी में आता है। यह बयान सिर्फ अमेरिका को जवाब नहीं था, बल्कि उन सभी देशों के लिए चेतावनी भी था, जो इस संघर्ष में किसी एक पक्ष के साथ खड़े हो सकते हैं।

ऊर्जा और व्यापार पर मंडराता खतरा

इस पूरे विवाद का सबसे बड़ा असर वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति पर पड़ सकता है। होर्मुज स्ट्रेट दुनिया के सबसे अहम समुद्री रास्तों में से एक है, जहां से बड़ी मात्रा में तेल और गैस का परिवहन होता है।

ईरान ने साफ कहा है कि अगर उस पर दबाव बढ़ा, तो वह न केवल होर्मुज, बल्कि कई अन्य रास्तों को भी प्रभावित कर सकता है।

इसका मतलब साफ है कि अगर स्थिति बिगड़ी, तो इसका असर सिर्फ दो देशों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा।

छाया में चल रही कूटनीति

जहां एक तरफ बयानबाजी तेज है, वहीं दूसरी ओर कूटनीतिक कोशिशें भी जारी हैं। खबर है कि पाकिस्तान ने दोनों पक्षों के बीच युद्धविराम का प्रस्ताव रखा है, जिसे इस्लामाबाद समझौता नाम दिया गया है।यह कोशिश इस बात का संकेत है कि दुनिया के कई देश इस टकराव को बढ़ने से रोकना चाहते हैं।

रेड सी से बढ़ती चिंता

इस पूरे घटनाक्रम में एक और परत जुड़ गई है-यमन के हूती विद्रोहियों की। ये विद्रोही पहले ही रेड सी में जहाजों पर हमले की चेतावनी दे चुके हैं।अगर यह खतरा वास्तविकता में बदलता है, तो समुद्री व्यापार के कई अहम रास्ते बाधित हो सकते हैं।

आम लोगों की चिंता है महंगाई

इन बड़े राजनीतिक और सैन्य बयानों के बीच सबसे ज्यादा असर आम लोगों पर पड़ता है।अगर होर्मुज स्ट्रेट प्रभावित होता है, तो तेल की कीमतें बढ़ेंगी, परिवहन महंगा होगा, और इसका सीधा असर रोजमर्रा की जिंदगी पर पड़ेगा।दिल्ली, मुंबई या किसी छोटे शहर में रहने वाला व्यक्ति शायद इस संघर्ष से हजारों किलोमीटर दूर हो, लेकिन उसकी जेब पर इसका असर जरूर पड़ेगा।

क्या यह टकराव टल सकता है?

इतिहास गवाह है कि कई बार ऐसे तनाव आखिरी वक्त पर कूटनीति के जरिए टल जाते हैं। लेकिन यह भी सच है कि एक छोटी सी चूक बड़े युद्ध का कारण बन सकती है।अभी स्थिति बेहद नाजुक है-एक तरफ आक्रामक बयान, दूसरी तरफ तंज और चेतावनी।

दुनिया एक चौराहे पर खड़ी है

‘होर्मुज की चाबी खो गई’ यह वाक्य सुनने में भले हल्का लगे, लेकिन इसके पीछे छिपी गंभीरता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।यह सिर्फ दो देशों के बीच का विवाद नहीं है। यह उस संतुलन की परीक्षा है, जिस पर आज की वैश्विक व्यवस्था टिकी हुई है।अब सवाल यह है कि क्या दुनिया इस तनाव को संभाल पाएगी, या फिर यह एक बड़े टकराव में बदल जाएगा।फिलहाल, पूरी दुनिया की नजरें उसी समुद्री रास्ते पर टिकी हैं-जहां से सिर्फ तेल ही नहीं, बल्कि वैश्विक शांति भी गुजरती है।

राघव चड्ढा की चुप्पी और आम आदमी पार्टी का गुस्सा: क्या दोस्ती टूट रही है?

आप ने राघव को क्यों हटाया? आरोपों का पूरा सच

आम आदमी पार्टी ने दो अप्रैल 2026 को राघव चड्ढा को राज्य सभा में अपना डेपुटी लीडर पद से हटा दिया और उनकी जगह आशोक मित्तल को नया डेपुटी लीडर बना दिया। पार्टी ने राज्य सभा सचिवालय को चिट्ठी लिखकर कहा कि अब राघव को पार्टी की तरफ से बोलने का समय न दिया जाए। यह फैसला बहुत अचानक आया और सबको चौंका दिया। आप के बड़े नेता जैसे सौरभ भारद्वाज और अतिशी ने कहा कि राघव पार्टी की लाइन नहीं मान रहे थे। वे विपक्ष के वॉकआउट में शामिल नहीं होते थे, सीईसी के खिलाफ मोशन पर साइन नहीं करते थे और पंजाब से जुड़े मुद्दों पर चुप रहते थे।

आरोप लगा कि वे बीजेपी से डरते हैं और सिर्फ सॉफ्ट मुद्दों जैसे एयरपोर्ट पर समोसे की कीमत या जियोम वर्कर्स की परेशानी पर बोलते हैं। पार्टी का कहना है कि जब अरविंद केजरीवाल गिरफ्तार हुए थे तब राघव लंदन में आंख की सर्जरी करा रहे थे और कई महीने चुप रहे। यह सब देखकर पार्टी को लगा कि राघव अब पुरानी तरह पार्टी के साथ नहीं खड़े हैं। लेकिन राघव ने तुरंत जवाब दिया। उन्होंने एक्स पर वीडियो डाला और कहा कि तीन आरोप हैं लेकिन सच्चाई जीरो है। वे कहते हैं कि वे हमेशा आम आदमी के मुद्दे उठाते रहे हैं और संसद में असर डालने के लिए जाते हैं, न कि हंगामा करने। यह घटना आप के अंदरूनी माहौल को दिखाती है जहां एक बार के करीबी नेता अब सवालों के घेरे में हैं। लोग सोच रहे हैं कि क्या यह सिर्फ अनुशासन की बात है या कुछ और गहरा है।

जब पार्टी संकट में थी तो राघव कहां थे?

दो हजार चौबीस में जब अरविंद केजरीवाल गिरफ्तार हुए और आप सड़कों पर प्रदर्शन कर रही थी तब राघव चड्ढा काफी चुप रहे। वे लंदन में आंख की इमरजेंसी सर्जरी कराने गए थे और कई महीने तक भारत नहीं लौटे। सितंबर दो हजार चौबीस में केजरीवाल रिहा हुए तो राघव उनसे मिलने गए लेकिन पहले के मुकाबले कम सक्रिय दिखे। पार्टी के कई नेता कहते हैं कि यह चुप्पी बहुत खली। वे पूछते हैं कि जब पूरा विपक्ष केजरीवाल के साथ खड़ा था तब राघव क्यों दूर रहे। राघव का कहना है कि सर्जरी जरूरी थी और वे ठीक होने के बाद वापस आए। लेकिन पार्टी को लगता है कि यह सिर्फ बहाना था। हाल के महीनों में भी राघव कई पार्टी कार्यक्रमों में नहीं दिखे। जब केजरीवाल प्रेस कॉन्फ्रेंस करने पार्टी ऑफिस आए तब भी राघव वहां नहीं थे।

आप के नेता अतिशी ने कहा कि राघव बीजेपी से डर गए हैं और अब बड़े मुद्दों पर बोलने से कतराते हैं। राघव ने इसका जवाब दिया कि वे संसद में आम आदमी की रोजमर्रा की परेशानियां उठा रहे हैं जैसे मिडिल क्लास पर टैक्स का बोझ, मोबाइल डेटा के एक्सपायरी नियम और डिलीवरी वर्कर्स की कम मजदूरी।

वे कहते हैं कि चुप्पी मतलब हार नहीं है बल्कि वे साइलेंस्ड हैं। यह बात साफ करती है कि राघव और आप के बीच दूरी बढ़ रही है। लोग पूछ रहे हैं कि क्या राघव अब व्यक्तिगत ब्रांडिंग पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं या पार्टी की पुरानी लड़ाई शैली से अलग हो गए हैं। दोनों तरफ से बातें चल रही हैं लेकिन आम आदमी को लग रहा है कि राजनीति में व्यक्तिगत और सामूहिक हित अक्सर टकराते हैं।

राघव पर लगे आरोप कितने वाजिब हैं?

आप के आरोपों पर नजर डालें तो कुछ बातें साफ दिखती हैं। पार्टी कहती है कि राघव अनुशासन नहीं मानते और विपक्ष के साथ कदम नहीं मिलाते। जैसे जब विपक्ष ने संसद से वॉकआउट किया तब राघव नहीं गए। सीईसी के खिलाफ प्रस्ताव पर साइन नहीं किए और पंजाब के मुद्दों को नजरअंदाज किया। अतिशी ने तो सीधे कहा कि राघव बीजेपी से डरते हैं और कई नेता इसी डर से पार्टी बदलते हैं। यह आरोप काफी गंभीर है क्योंकि आप हमेशा सख्त विपक्षी रुख के लिए जानी जाती है। लेकिन राघव का पक्ष भी मजबूत है। उन्होंने वीडियो में कहा कि तीन आरोप हैं लेकिन सच जीरो है। वे चुनौती देते हैं कि पार्टी साबित करे कि उन्होंने वॉकआउट छोड़ा। राघव कहते हैं कि वे संसद में ऐसे मुद्दे उठाते हैं जो आम लोगों को छूते हैं। जैसे एयरपोर्ट कैंटीन में महंगा खाना, गिग वर्कर्स की सुरक्षा, मिडिल क्लास का टैक्स बोझ और डिजिटल एसेट्स को लीगल बनाने की मांग। वे कहते हैं कि ये मुद्दे भी अहम हैं और इनसे आम आदमी को फायदा होता है। कई लोग मानते हैं कि राघव का तरीका अलग है लेकिन गलत नहीं। वे पुराने तरीके से हंगामा नहीं करते बल्कि प्रैक्टिकल बातें रखते हैं। फिर भी पार्टी की नजर में यह अनुशासन भंग है। दोनों तरफ तर्क हैं। एक तरफ पार्टी एकजुटता चाहती है तो दूसरी तरफ राघव कहते हैं कि आवाज दबाना गलत है। यह बहस दिखाती है कि राजनीति में क्या सही है इस पर अलग-अलग राय हो सकती है। वाजिब या नहीं, यह फैसला समय बताएगा लेकिन फिलहाल दोनों पक्ष मजबूती से अपनी बात रख रहे हैं।

आखिर राघव चाहते क्या हैं?

राघव चड्ढा का वीडियो देखकर लगता है कि वे पार्टी के अंदर रहते हुए भी अपनी आवाज आजाद रखना चाहते हैं। वे कहते हैं कि मैं आम आदमी के लिए बोलता हूं तो मुझे क्यों रोक रहे हैं। उन्होंने लिखा कि साइलेंस्ड हूं लेकिन डिफीटेड नहीं। उनका संदेश साफ है कि वे संसद में असरदार काम करना चाहते हैं न कि सिर्फ पार्टी लाइन फॉलो करना। राघव दो हजार बारह से आप के साथ हैं और केजरीवाल के करीबी रहे लेकिन अब लगता है कि वे अलग रास्ता चुन रहे हैं। शायद वे चाहते हैं कि पार्टी मिडिल क्लास और रोजमर्रा के मुद्दों पर ज्यादा ध्यान दे। जैसे जियोम वर्कर्स, महंगे खाने या टैक्स के बोझ पर। वे व्यक्तिगत रूप से ज्यादा सक्रिय दिख रहे हैं और सोशल मीडिया पर अपनी बातें डाल रहे हैं। कुछ लोग कहते हैं कि शादी के बाद उनका फोकस बदला है लेकिन राघव इसे नहीं मानते। वे कहते हैं कि मैं गलत कुछ नहीं कर रहा। शायद राघव पार्टी में ज्यादा स्वतंत्रता चाहते हैं या फिर अपनी पहचान बनाना चाहते हैं। वे चेतावनी भी देते हैं कि मेरी चुप्पी को हार मत समझना। यह दिखाता है कि वे लड़ना चाहते हैं लेकिन अपने तरीके से।

आप की तरफ से कोई स्पष्ट जवाब नहीं आया है कि राघव को वापस कैसे शामिल किया जाए। फिलहाल दोनों तरफ बातें चल रही हैं लेकिन राघव का फोकस आम आदमी पर है। लोग सोच रहे हैं कि क्या राघव पार्टी छोड़ेंगे या अंदर रहकर बदलाव लाएंगे। उनकी मंशा साफ है कि वे चुप नहीं बैठना चाहते और आवाज उठाते रहना चाहते हैं।

क्या यह रिश्ता बचा पाएगा? आगे का रास्ता

अब सवाल यह है कि आप और राघव चड्ढा का रिश्ता कितना टिकेगा। पिछले एक साल से दूरी बढ़ रही है लेकिन अब यह खुलकर सामने आ गई है। पार्टी ने राघव को पद से हटाकर सिग्नल दिया है कि अनुशासन जरूरी है। राघव ने जवाब देकर कहा है कि वे हार नहीं मानेंगे। दोनों तरफ से आरोप-प्रत्यारोप चल रहे हैं लेकिन कोई भी पक्ष पूरी तरह नहीं हट रहा है। आप के नेता कहते हैं कि हम सब केजरीवाल के सिपाही हैं और बड़े मुद्दों पर लड़ना चाहिए। राघव कहते हैं कि आम आदमी की छोटी-छोटी परेशानियां भी बड़ी हैं। यह बहस सोचने पर मजबूर करती है कि राजनीति में एकजुटता और व्यक्तिगत सोच कैसे साथ चलें। कई लोग मानते हैं कि राघव अच्छे मुद्दे उठा रहे हैं लेकिन पार्टी की रणनीति अलग है। आगे क्या होगा यह देखना बाकी है। हो सकता है दोनों पक्ष बातचीत करें और समझौता हो जाए। या फिर राघव को और अलग-थलग किया जाए। आम आदमी पार्टी की ताकत हमेशा एकता रही है इसलिए यह दरार उसे कमजोर कर सकती है। राघव भी पुराने साथी हैं इसलिए उनका जाना आसान नहीं। यह घटना राजनीति के उन पहलुओं को दिखाती है जहां पुरानी दोस्ती नई सोच से टकराती है। लोग उम्मीद करते हैं कि दोनों तरफ समझदारी दिखे और आम आदमी का मुद्दा आगे रहे। फिलहाल विवाद गरम है लेकिन समय सब सुलझा सकता है।

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक
भारत श्री
राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
सोमवार, 06 अप्रैल 2026 , विक्रम संवत 2080

क्यों लगातार मजबूत हो रहा है संघ परिवार?

यह बात पूरी तरह स्थापित हो गई है कि भारत की पहचान हिंदू संघ और भाजपा के साथ जुड़ गई है। भारत दुनिया का अकेला देश है जहां इस तरह राजनीति में हिंदू और हिंदुत्व का महत्व बढ़ रहा है। अभी तीन-चार दिन पहले ही चंडीगढ़ में पंजाब भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय पर बमों से आक्रमण किया गया। इस आक्रमण के संबंध में जब गहराई से जांच पड़ताल की गई तो उसका संबंध पाकिस्तान से पाया गया और पाकिस्तान को भी पुर्तगाल तथा जर्मनी के उग्रवादी मदद कर रहे थे। इस तरह दुनिया के कई देशों के उग्रवादी पंजाब के कुछ सिखों को अपने साथ जोड़कर भारत में हिंदू संघ और भाजपा पर आक्रामक है। भाजपा को छोड़कर भारत के अधिकांश राजनीतिक दलों का विदेश से भी बहुत अच्छा संबंध है राहुल गांधी के बारे में तो सारी बातें खुलकर सामने आ चुकी हैं कि राहुल गांधी की विदेश में कितनी अधिक अप्रोच है। अरविंद केजरीवाल के बारे में भी ऐसी बातें सुनी जाती हैं कुछ मुस्लिम नेताओं का भी विदेश से नजदीकी संबंध है लेकिन यह आश्चर्य की बात है कि किस प्रकार विदेशी भारत विरोधियों के साथ भारत के राजनीतिक दल संबंध रखकर भी संघ के विस्तार को रोक नहीं पा रहे हैं। यहां तक की कुछ आतंकवादी सिखों ने भी इस विरोध का ठेका उठाया है लेकिन भारत में संघ हिंदू बीजेपी यह लगातार शक्तिशाली होते जा रहे हैं। भारत के लगभग सभी गांधीवादी भी इस विरोध में शामिल है अनेक गांधीवादियों को विदेशों से मदद मिलती है यह बात स्पष्ट हो चुकी है फिर भी शत्रुओं के संगठित प्रयास के बाद भी संघ लगातार मजबूत हो रहा है इससे यह सिद्ध होता है कि ईश्वर है और कहीं ना कहीं से संघ को ईश्वरीय मदद भी मिल रही है।

बजरंग मुनि

सरकारी स्कूल से सपनों तक

@ स्नेहवीर

एक दौर था ज़ब प्राइमरी शिक्षा किसी अभिभावक के लिए कोई बड़ा विषय नहीं था, गाँव गाँव सरकारी प्राइमरी स्कूल खोले गए जिनकी फीस 20 या 50 पैसे होती थी। हालांकि उस समय ही आजाद हुए थे तो सरकारी तंत्र के पास पैसा और संसाधनों का अभाव भी था फिर भी जनता के पैसे का उपयोग जनता के लिए हुआ। अधिकांश लोग इन्हीं में पढ़ते थे। इन स्कूलों से पढ़कर ही लोग शिक्षक,डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, प्रशासनिक अधिकारी, प्रोफेसर और नेता बनते थे। यह एक सामान्य बात थी।

लोगों को लगा कि यह सब अधिकार फ्री में मिले हैं परन्तु ऐसा था नहीं। यह सब आजादी की लड़ाई में हुए संघर्ष और बलिदानों का परिणाम था जो उन्हें मिल रहा था फ्री सरकारी पढ़ाई के रूप में, सरकारी अस्पतालों के रूप में, नौकरियों के रूप में, पेशन के रूप में आदि आदि।

फिर जनता ने इसे अपना अधिकार मानकर इसकी तरफ से आंख फेर ली और सरकारों और उनके मित्र पूंजीपतियों को समझ आया कि सबसे लाभकारी धंधा तो यह ही है। धीरे धीरे सब कुछ बिकने लगा और एक पालिसी के तहत सरकारी संस्थानों को तबाह करके निजीकरण का रास्ता खोला गया। अब प्राइमरी शिक्षा हर अभिभावक के लिए सुरसा के मुँह की तरह होता गया जिसका खर्च रोज बढ़ रहा है और रोजगार बिना सुरक्षा और बिना मानकों के होता गया। एक तरफ अभिभावकों से मोटी मोटी फीस खींची जाने लगी और दूसरी तरफ इन संस्थानों में काम करने वाले लोगों को अधिकांश जगह मजदूर जैसा वेतन दिया जाने लगा। इस धंधे में लगे तमाम लोग मोटा पैसा कमाकर उसे साधन बनाकर राजनीतिक दलों में और सदनों में पहुँच गए परिणामस्वरूप सरकारों ने आँख बंद कर ली। अब आम आदमी को जकड़कर चूसा जा रहा है और राजनीतिक दल आंख बंद करके बैठ गए हैं। इसका बहुत सीधा कारण यह है कि चुनाव शिक्षा स्वास्थ्य रोजगार पर होता ही नहीं वह जाति, धर्म और धन पर केंद्रित हो गया।

अब इस मकड़जाल से निकलने का एकमात्र रास्ता जनआंदोलन है। यह बात अब समझ लीजिए या दस साल बाद समझ लीजिए। इसका हल 50 लाख की गाड़ी में चलने वाले आपके नेताजी के पास तो बिल्कुल भी नहीं है आपके ही पास है। फ्री शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए अब लड़ो या 10 वर्ष बाद लड़ो।

जय हो...

जुबानी तीर

"मैंने हमेशा संसद के भीतर और बाहर आम लोगों के मुद्दे उठाने की कोशिश की है-चाहे वह महंगाई हो, शिक्षा हो या आम जनता की रोजमर्रा की परेशानियां। अगर जनता की आवाज़ उठाना अपराध है, तो मैं यह अपराध बार-बार करूंगा। आज मुझे बोलने से रोका गया है, मेरी भूमिका सीमित की गई है, लेकिन मेरी खामोशी को मेरी हार मत समझिए। मैं राजनीति में किसी पद के लिए नहीं आया, बल्कि एक उद्देश्य के साथ आया हूं। मैं वो दरिया हूं, जो वक्त आने पर सैलाब बनता है, और जनता की आवाज को दबाया नहीं जा सकता।

राघव चड्ढा (राज्यसभा सांसद)

"राघव चड्ढा पार्टी लाइन से हटकर काम कर रहे थे। महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों पर उन्होंने पार्टी का साथ नहीं दिया। यहां तक कि प्रधानमंत्री और भाजपा के खिलाफ उनके पुराने पोस्ट भी अब गायब हैं।

सौरभ भरद्वाज (आप नेता)

"पार्टी में अनुशासन सबसे जरूरी है। अगर कोई नेता सामूहिक निर्णयों से अलग चलता है, तो संगठन को फैसला लेना ही पड़ता है। आम आदमी पार्टी विचारधारा से समझौता नहीं करती।

भगवंत मान (पंजाब के मुख्यमंत्री)

विज्ञापन एवं वार्षिक सब्सक्रिप्शन के लिए ऑफिस के पते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@bharatshri.com ईमेल करें।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

सूखा नशा छोड़ने के आयुर्वेदिक उपाय

शरीर, मन और जीवन को फिर से संतुलित करने की राह

सूखा नशा-चाहे वह गांजा, चरस, अफीम, तंबाकू या किसी भी प्रकार का ड्रग हो-धीरे-धीरे व्यक्ति को भीतर से खोखला कर देता है। शुरुआत अक्सर जिज्ञासा या दोस्तों के प्रभाव से होती है, लेकिन धीरे-धीरे यह शरीर और मन दोनों पर हावी हो जाता है।

सबसे बड़ी समस्या यह है कि व्यक्ति खुद भी जानता है कि वह गलत कर रहा है, लेकिन चाहकर भी निकल नहीं पाता। ऐसे में आयुर्वेद एक ऐसी राह दिखाता है, जो सिर्फ नशा छुड़ाने तक सीमित नहीं, बल्कि पूरे जीवन को संतुलित करने पर जोर देता है।

आयुर्वेद क्या कहता है नशे के बारे में

आयुर्वेद के अनुसार नशा मन और शरीर के दोषों को असंतुलित कर देता है। विशेष रूप से वात और पित्त दोष बिगड़ जाते हैं, जिससे बेचैनी, गुस्सा, अनिद्रा, कमजोरी और मानसिक अस्थिरता बढ़ती है।इसलिए आयुर्वेदिक इलाज सिर्फ नशा छुड़ाने का नहीं, बल्कि शरीर को भीतर से ठीक करने का होता है।

धीरे-धीरे छोड़ना, अचानक नहीं

सबसे पहली और जरूरी बात-नशा एकदम से छोड़ने की कोशिश कई बार उल्टा असर कर सकती है।आयुर्वेद कहता है कि मात्रा को धीरे-धीरे कम करें

शरीर को बदलाव के लिए समय दें। इससे शरीर पर झटका कम पड़ता है और सफलता की संभावना बढ़ती है।

अश्वगंधा: मन को स्थिर करने की जड़ी

अश्वगंधा को आयुर्वेद में "शक्ति और शांति" देने वाली औषधि माना जाता है।

कैसे मदद करती है:

तनाव और बेचैनी कम करती है

नींद बेहतर बनाती है

नशे की तलब को धीरे-धीरे कम करती है

कैसे लें:

रोज रात को दूध के साथ आधा चम्मच अश्वगंधा चूर्ण लें।

ब्राह्मी: दिमाग को शांत रखने का उपाय

नशा छोड़ते समय सबसे बड़ी समस्या होती है—मन का अस्थिर होना।

ब्राम्ही दिमाग को शांत करती है और एकाग्रता बढ़ाती है।

फायदे:

चिंता और घबराहट कम होती है

याददाश्त और सोचने की क्षमता सुधरती है

नशे की craving पर नियंत्रण मिलता है

गिलोय: शरीर की सफाई का प्राकृतिक तरीका

नशे से शरीर में टॉक्सिन जमा हो जाते हैं। गिलोय इन्हें बाहर निकालने में मदद करता है।

फायदे:

खून साफ करता है

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है

शरीर को अंदर से मजबूत बनाता है

सुबह खाली पेट गिलोय का रस लेना फायदेमंद होता है।

त्रिफला: शरीर को भीतर से साफ करना

त्रिफला तीन फलों का मिश्रण है—हरड़, बहेरा और आंवला।

यह क्यों जरूरी है:

पाचन तंत्र ठीक करता है

शरीर में जमा गंदगी निकालता है

कब्ज और कमजोरी दूर करता है

रात को सोने से पहले गुनगुने पानी के साथ त्रिफला लेना अच्छा माना जाता है।

पंचकर्म थेरेपी: गहराई से डिटॉक्स

अगर नशा ज्यादा पुराना है, तो आयुर्वेद में पंचकर्म थेरेपी बहुत प्रभावी मानी जाती है।

इसमें शरीर की गहराई से सफाई की जाती है, जैसे:

वमन (उल्टी के माध्यम से शुद्धि)

विरेचन (पाचन तंत्र की सफाई)

बस्ती (आंतों की शुद्धि)

यह प्रक्रिया विशेषज्ञ की देखरेख में ही करनी चाहिए।

ध्यान और प्राणायाम: मन पर नियंत्रण

नशा सिर्फ शरीर की नहीं, मन की भी बीमारी है।

क्या करें:

रोज 10-15 मिनट ध्यान करें

अनुलोम-विलोम और कपालभाति करें

फायदे:

मन शांत होता है

इच्छाशक्ति मजबूत होती है

नशे की तलब धीरे-धीरे कम होती है

आहार में बदलाव: सही खाना ही दवा है

नशा छोड़ते समय खानपान बहुत अहम भूमिका निभाता है।

क्या खाएं:

हरी सब्जियां

ताजे फल

दूध और घी

क्या न खाएं:

ज्यादा मसालेदार भोजन

जंक फूड

चाय-कॉफी की अधिकता

सादा और संतुलित आहार शरीर को जल्दी ठीक करता है।

दिनचर्या को व्यवस्थित करना

नशा छोड़ने के लिए जीवनशैली बदलना बेहद जरूरी है।

कुछ जरूरी बदलाव:

समय पर सोना और उठना नियमित व्यायाम करना ,खाली समय में अच्छे काम करना,जब जीवन में अनुशासन आता है, तो नशे की जगह खुद ही कम होने लगती है।

संगति बदलना भी जरूरी

कई बार नशा छोड़ने में सबसे बड़ी बाधा वही लोग होते हैं, जिनके साथ हम समय बिताते हैं।इसलिए नशा करने वाले दोस्तों से दूरी बनाएं। सकारात्मक लोगों के साथ समय बिताएं। यह छोटा बदलाव बहुत बड़ा असर डालता है।

परिवार और समर्थन की ताकत

नशा छोड़ना अकेले संभव नहीं होता।परिवार का साथ, दोस्तों का समर्थन और समझदारी बहुत जरूरी है।अगर कोई व्यक्ति नशा छोड़ने की कोशिश कर रहा है, तो उसे ताने नहीं, सहारा चाहिए।

खुद पर विश्वास सबसे जरूरी

आखिर में सबसे जरूरी चीज है-खुद पर भरोसा।नशा छोड़ना मुश्किल जरूर है, लेकिन असंभव नहीं।हर दिन एक नई शुरुआत हो सकती है।हर छोटी जीत, बड़ी सफलता की ओर ले जाती है।

नया जीवन संभव है

सूखा नशा छोड़ना सिर्फ एक आदत को छोड़ना नहीं, बल्कि एक नई जिंदगी शुरू करना है।आयुर्वेद हमें सिखाता है कि शरीर, मन और आत्मा तीनों का संतुलन जरूरी है। जब यह संतुलन वापस आता है, तो नशा अपने आप दूर होने लगता है।आज अगर आप या आपका कोई अपना इस जाल में फंसा है, तो याद रखिए-रास्ता है, उम्मीद है और इलाज भी है। बस पहला कदम उठाना है।

पाठकों के सवाल

क्या आपको स्वास्थ्य से जुड़ी कोई समस्या है और आप उसका समाधान आयुर्वेद के माध्यम से जानना चाहते हैं? अब आप अपने सवाल हमें भेज सकते हैं। आपके द्वारा भेजे गए चुनिंदा प्रश्नों का उत्तर अनुभवी आयुर्वेदाचार्य द्वारा दिया जाएगा और उन्हें इस पेज पर प्रकाशित किया जाएगा।

अपने सवाल हमें ईमेल करें
hi@bharatshri.com

कृपया अपने सवाल के साथ अपनी उम्र, शहर और समस्या का संक्षिप्त विवरण अवश्य लिखें, ताकि विशेषज्ञ सही सलाह दे सकें।

सन्त गोविन्ददास जी की दिव्य भक्ति

सन्त शब्द भगवान के सत्स्वरूप की विशेष उपाधि है। सन्त का प्राणधन सत्य है। इस सत्य के प्रति विशेष अनुरक्ति ही उपासना के क्षेत्र में भगवत्सम्बन्ध अथवा भक्ति है। सन्त गोविन्ददास जी भगवान श्रीकृष्ण के विशेष कृपापात्र थे। वे सखाभाव से उनकी भक्ति करते थे। विचित्र बात यह थी कि श्यामसुन्दर साक्षात् प्रकट होकर उनके भाव के अनुकूल उनके साथ खेला करते थे। दोनों में गहरी छनती थी। कृष्ण की सख्य-भक्ति के प्रचार में सन्त कवि गोविन्ददास जी का विशेष हाथ स्वीकार किया जा सकता है। उन्होंने पुष्टिमार्ग के सिद्धान्त के अनुरूप भगवान श्रीकृष्ण की सख्य-भक्ति सिद्ध की। वे वैराग्य के रतिक थे, भक्त, सन्त और कवि थे, महान भगवदीय थे।

जीवन काल और समय की पृष्ठभूमि

उनके जीवन काल में भारत के अधिपति महामुगल अकबर थे। अकबर की उदारता और मेल-जोल की नीति से देश में राजनैतिक शान्ति थी। जनता सुखी और निश्चिन्त थी। ऐसे समय में भगवद्भक्ति के प्रचार का पवित्र और शुभ कार्य आरम्भ हुआ। व्रज में श्रीकृष्ण की और अवध में राम की भक्ति लहलहा उठी। तत्कालीन साहित्य चेतना भगवद्भक्ति में भर गई। सन्त गोविन्ददास जी की वाणी को इस साहित्य-शान्ति में जनसाधारण का सहयोग मिला। गोस्वामी विठ्ठलनाथ जी ने उन्हें हवीवर की उपाधि से सम्मानित किया था। गोविन्ददास जी भगवान श्रीकृष्ण के श्रीदाम सन्ना के स्वरूप माने जाते हैं। वे श्रीकृष्ण के परम अनुरागी थे। गोस्वामी विठ्ठलनाथ जी और अन्दावन में उनकी बड़ी श्रद्धा और भक्ति थी। गोविन्ददास जी ने बड़ी पवित्रता से आजीवन श्रीकृष्ण की लीला गायी।

जन्म और प्रारम्भिक जीवन

सम्वत् 1562 वि के लगभग व्रज के निकट भरतपुर राज्य के अन्तर्गत आन्तरी गांव में एक सनाढ्य ब्राह्मण कुल में गोविन्ददास जी का जन्म हुआ था। बाल्यावस्था से ही उनमें संसार के प्रति अनासक्ति और वैराग्य के बीज अंकुरित होने लगे। गृहस्थाश्रम में उनका मन नहीं लग सका। उन्होंने संन्यास ले लिया। उन्होंने महावन में निवास स्थिर किया। एक ऊँचे टीले पर बैठकर शास्त्रीय विधि से संगीत गाया करते थे। वे कुशल कवि थे, यद्यपि उनकी शिक्षा न्यून थी तो भी उनकी सूझ और प्रतिभा निराली तथा अलौकिक थी। वे भगवद्-भक्ति में सने सुन्दर-सुन्दर पद बनाकर भगवान को रिझाया करते थे। अकबर बादशाह की राजसभा के संगीत सम्राट तानसेन कभी-कभी उनसे मिलने आया करते थे। तानसेन और उनमें गोस्वामी विठ्ठलनाथ जी के सम्बन्ध में प्रायः बातें हुआ करती थीं। गोस्वामी विठ्ठलनाथ और गोविन्ददास जी दोनों एक दूसरे के यश और भक्ति-भावना से परिचित थे, यद्यपि उनका कभी साक्षात्कार नहीं हुआ था।

दीक्षा और गुरु कृपा

तानसेन की प्रेरणा से गोविन्द स्वामी ने गोस्वामी विठ्ठलनाथ से दीक्षा लेने का निश्चय किया। शिष्य होने के पहले एक दिन वे गोकुल गये। उन्होंने यमुनातट पर गोस्वामी जी को सन्ध्या वन्दन करते देखा। वे आश्चर्य चकित हो गये कि भक्ति में कर्मकाण्ड की क्या महत्ता है। मन्दिर में उपस्थित होकर उन्होंने गोस्वामी जी के सम्मुख अपनी जिज्ञासा प्रकट की। गोस्वामी विठ्ठलनाथ जी ने समाधान किया कि भक्तिमार्ग फूलरूपी है और कर्ममार्ग काँटारूप है। फूल बिना रक्षा के नहीं फूलते, इसलिए उनकी चारों ओर वैदिक कर्मकाण्ड का बाड़ा लगा दिया जाता है। कर्म से भक्ति की मर्यादा सुरक्षित होती है। गोस्वामी जी के भक्ति और कर्म के समन्वय सिद्धान्त से गोविन्दस्वामी बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने गोस्वामी जी से शरणागति की प्रार्थना की। सम्वत् 1592 वि में गोस्वामी जी ने उन्हें दीक्षा दी। वे गोविन्दस्वामी से गोविन्ददास हो गये। गोस्वामी जी के परम कृपापात्र और भक्त हो गये। वे श्रीनाथ जी के कीर्तनकार नियुक्त हुए। दीक्षा के बाद वे आजीवन गुरु और भगवान श्यामसुन्दर की सेवा में संलग्न रहे।

वासस्थान और व्रज प्रेम

वे गोवर्धन के निकट कदम्ब वृक्षों की एक रमणीय वाटिका में रहने लगे। वह स्थान गोविन्ददास की कदम खण्डी के नाम से प्रसिद्ध है। वे सरस पदों की रचना कर श्रीनाथ जी की सेवा करने लगे। भगवान नन्दनन्दन के व्रज पर उन्होंने सर्वस्व समर्पित कर दिया। उन्होंने चिन्मय व्रजभूमि में प्रगाढ़ श्रद्धा और निष्ठा प्रकट की है। व्रज की धूलि में उन्हें अपने मदनमोहन श्रीनाथ जी की चिन्मयता प्रतिबिम्बित दिख पड़ती थी। व्रज-महिमा के बखान में उनकी उक्ति है कि वैकुण्ठ में जाकर क्या होगा, उसमें कालिन्दी की श्यामता, नन्द-यशोदा के वात्सल्य, श्यामसुन्दर की मुरली ध्वनि और राधारानी के चरणारविन्द का दर्शन ही नहीं हो सकता। इन चिन्मय पदार्थों के दर्शन का सौभाग्य व्रज में ही मिल सकता है। कवि का पद हैः

"कहा करो वैकुण्ठे जाइ।
जहाँ नही वसीवट जमुना गिरि गोवर्धन, नन्द की गाइ।
जहाँ नही ए कुज लता द्रुम, मन्द सुगन्ध वाजत नहि वाइ।
कोकिल मोर हस नहि जत, ताको वसिवो कहा सुहाइ।
जहाँ नही वसी धुनि वाजत कृष्ण न पुरवत अधर लगाइ।
प्रेम पुलक रोमाञ्चय उपजत मन क्रम बच आवत नहि दाइ।
जहाँ नहि ए भुववृन्दावन वावा नन्द जसोमति माइ ।
'गोविन्द' प्रभु तजि नन्द सुवन को व्रज तजि वहाँ वसति बलाइ।"

चमत्कारपूर्ण घटनाएँ

गोविन्ददास जी ने मुक्ति का परित्याग कर भक्ति की राजधानी में अपने आप को नीलाम कर दिया। उनके जीवन में अनेक चमत्कारपूर्ण घटनाओं का परिचय मिलता है। ब्रह्मसम्बन्ध लेने के बाद वे गोवर्धन में ही रहने लगे थे। एक बार उनके गांव के कुछ परिचित व्यक्ति नीर पूर्वाश्रम के गृहस्थ उन्हें मिलने आये। वे यशोदाघाट पर स्नान कर रहे थे। उन्होंने गांव वालों को पहचान लिया पर गांव वाले यह नहीं समझ सके कि गोविन्द स्वामी वे ही हैं। गांव वालों ने गोविन्द स्वामी का पता पूछा तो उन्होंने कहा कि गोविन्द स्वामी की मृत्यु हो गयी। गोविन्ददास के नाम में उन्होंने अपना परिचय दिया। वे वैराग्य के मूर्तिरूप गोविन्ददास जी के चरण-स्पर्श पर धन्य हो गये।

काल का समय था। अत्यन्त शान्त वातावरण था। पशु-पक्षी सब-के-सब गान सुनने में तल्लीन थे। अगणित भक्त उपस्थित थे। गोविन्ददास जी झूम-झूम कर गा रहे थेः

"आओ मेरे गोविन्द, गोकुल चन्दा।
भइ वडी वार खेलत जमुना तट, वदन दिखाइ देहु आनदा। गायन की आवन की विरियाँ, दिनमनि किरन होति अति मदा आये तात, मात छतियाँ लगे, 'गोविन्द' प्रभु व्रज जन सुख कदा ।"

श्रोताओं में तानसेन और उनके साथ साधारण वेश में अकबर ने भी सरस गान का रसास्वादन किया। अकबर के मुख से सहसा वाह-वाह शब्द निकल पड़े। गोविन्ददास जी से अकबर ने कहा कि मैं बादशाह हूँ। गोविन्ददास जी ने कहा कि तुम बादशाह हो तो बादशाही करो, इस स्थान पर तुम्हारी आवश्यकता नहीं है। व्रजराज के भक्त के मुख से ऐसी बात सुनकर उदार अकबर को प्रसन्नता हुई। अकबर के जाने के बाद गोविन्ददास जी ने सोचा कि अकबर की वाह-वाही से भैरव राग अपवित्र हो गया। उन्होंने श्रीनाथ जी के सामने भैरव राग कभी न गाने का नियम लिया और उसे आजीवन निभाया। इस प्रकार उन्होंने श्रीनाथ जी की शुद्ध भक्ति में अपने समय का सदुपयोग किया। भगवान से सम्बन्ध होने पर लोक का विस्मरण हो जाता है, मन स्वाभाविक रूप से चिन्मय आनन्द में रमण करने लगता है।

अनन्य भक्ति और सख्य भाव

श्रीनाथ जी ही उनके सर्वस्व थे। वे कदमखण्डी में अपनी बहन कान्हावाई, जो गोस्वामी विठ्ठलनाथ जी की शिष्या थी, के साथ रहते थे। एक दिन उनकी लड़की गोविन्ददास जी से मिलने आयी। बहुत दिनों तक उनके साथ रही पर उन्होंने एक दिन भी बात नहीं की। कान्हावाई के पूछने पर उन्होंने निस्संकोच कहा कि मन एक है, वह श्रीनाथ जी की रूप-माधुरी में आसक्त है इसलिए लड़की से बात करने या उसके प्रति स्नेह प्रकट करने का अवकाश ही नहीं मिलता। यह थी श्रीनाथ जी के चरणों में उनकी अनन्यता।

वे श्रीनाथ जी को अपना सखा मानते थे। उन्होंने सख्य भक्ति सिद्ध की। श्रीनाथ जी उनके साथ खेलते थे, हँसते थे, सदा उनके संयोग से प्रसन्न होते थे। निस्सन्देह वृन्दावन की पवित्र भूमि धन्य है जिस पर भगवान कृष्ण भक्तों का मनोरंजन करते रहते हैं। एक बार खेल-ही-खेल में उन्होंने श्रीनाथ जी को कंकड़ी मारी। मुखिया ने गोस्वामी विठ्ठलनाथ जी से शिकायत की। उन्होंने गोविन्ददास जी से कारण पूछा। उन्होंने कहा कि आपके लाला ने तीन कंकड़ी मारी थी, मैंने बदला लिया। गोस्वामी जी ने गोविन्ददास जी के सौभाग्य की सराहना की और भगवान की लीला समझकर मौन हो गये। गोविन्ददास जी तो श्रीनाथ जी के सखा ही थे।

आचार-निष्ठा और यमुना भक्ति

वे बड़े आचारनिष्ठ थे। महाप्रभु वल्लभाचार्य के सिद्धान्त में उनकी गहरी निष्ठा थी। उनका प्रत्येक आचरण पुष्टि-सिद्धान्त के अनुरूप था। श्रीयमुना जी में उनकी बड़ी भक्ति थी। उनकी दृष्टि में यमुना जी साक्षात् स्वामिनी श्री राधाजी ही थीं। उन्होंने कभी यमुना जी में पैर नहीं रखे, न उनमें स्नान किया और न आचमन किया। यमुना-जल पीते थे पर स्नान कूप के जल से ही करते थे। उनके समस्त आचार-विचार पूर्ण रूप से भगवदनुकूल थे। कालिन्दनन्दिनी के तीर पर कुजलीला में मग्न राधाकृष्ण का ही उन्होंने आजीवन विहार-दर्शन किया।

समाधि और काव्य रचना

गोस्वामी विठ्ठलनाथ जी के लीला-प्रवेश के समय ही सम्वत् 1642 वि में कार्तिक कृष्ण सप्तमी को उन्होंने गोलोक की यात्रा की। गोवर्धन की एक कन्दरा के निकट उन्होंने देहत्याग किया।

गोविन्ददास जी विनोदी स्वभाव के होते हुए भी भक्ति के परम मर्मज्ञ थे। अष्टछाप के कवियों में उनकी आचार-निष्ठा और श्रीनाथ जी के प्रति प्रगाढ़ प्रेम देखकर गोस्वामी जी ने उन्हें कवीश्वर की संज्ञा से सम्मानित किया। गोविन्ददास जी महात्मा, सन्त, भक्त तथा कवि सब कुछ थे। उनकी करनी कथनी समान थी। भगवान के अनुकूल थी। उन्होंने 252 लीलासम्बन्धी तथा अनेक फुटकर पदों की रचना की।

मंदिरों में VIP संस्कृति: भगवान के दरबार में भी अमीर-गरीब का फर्क?

VIP दर्शन की सबसे ज्यादा प्रथा किन मंदिरों में है?

भारत के बड़े-बड़े मंदिरों में VIP कल्चर आजकल आम बात हो गया है जहां अमीर या पद वाले लोग सामान्य भक्तों से पहले दर्शन कर लेते हैं। सबसे ज्यादा यह प्रथा तिरुपति बालाजी मंदिर में दिखती है जहां श्रीवाणी ट्रस्ट के तहत दस हजार रुपये का टिकट लेकर लोग ब्रेक दर्शन कर सकते हैं और लंबी लाइन से बच जाते हैं। वैष्णो देवी मंदिर में भी अधिकारियों और प्रभावशाली लोगों के लिए प्राथमिकता वाली व्यवस्था है जिससे सामान्य श्रद्धालु घंटों इंतजार करते रहते हैं। शिरडी साईं बाबा मंदिर में दो सौ रुपये का VIP पास मिलता है जो सीधा दर्शन का रास्ता खोल देता है। इन मंदिरों में हर साल लाखों भक्त आते हैं इसलिए प्रबंधन पैसा कमाने और भीड़ नियंत्रित करने के नाम पर यह सुविधा चलाता है। इससे मंदिर को करोड़ों रुपये की आमदनी होती है लेकिन सामान्य लोग नाराज रहते हैं। मार्च दो हजार छब्बीस में झारखंड के एक मंदिर का वीडियो वायरल हुआ जहां VIP लोगों के कारण भक्तों को धक्का दिया जा रहा था। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने जनवरी दो हजार पच्चीस में कहा था कि मंदिरों में VIP दर्शन भक्ति के खिलाफ है। फिर भी इन प्रसिद्ध जगहों पर यह चलन जारी है क्योंकि यहां भीड़ बहुत ज्यादा है और प्रबंधन इसे सुविधा मानता है। इससे भक्तों में गुस्सा बढ़ रहा है लेकिन बड़े मंदिर अभी इसे बंद करने को तैयार नहीं दिखते।

कहाँ नहीं चल रही है यह प्रथा?

कुछ मंदिरों में VIP कल्चर बिल्कुल नहीं है या हाल ही में बंद कर दिया गया है जो सकारात्मक संकेत देता है। गुजरात का सोमनाथ मंदिर इसका अच्छा उदाहरण है जहां सबको एक ही लाइन में खड़ा होना पड़ता है। यहां मोबाइल फोन तक नहीं ले जा सकते चाहे आप कोई भी हों और प्रधानमंत्री भी सामान्य भक्तों की तरह ही दर्शन करते हैं। कोई अलग पास या प्राथमिकता नहीं दी जाती। इसी तरह मथुरा के बांके बिहारी मंदिर में सितंबर दो हजार पच्चीस में सुप्रीम कोर्ट की समिति ने VIP पास पूरी तरह बंद कर दिए। अब सभी भक्त एक समान व्यवस्था में दर्शन करते हैं और मंदिर का समय भी बढ़ा दिया गया है ताकि भीड़ अच्छे से संभली जा सके। छोटे-छोटे मंदिरों या स्थानीय मंदिरों में अक्सर ऐसी कोई अलग सुविधा नहीं होती क्योंकि वहां भीड़ कम रहती है। सिख गुरुद्वारों में तो हमेशा से सबको बराबर माना जाता है लेकिन हिंदू मंदिरों में भी कुछ जगहों पर प्रबंधन ने सोचा कि भक्ति में भेदभाव नहीं होना चाहिए। इन उदाहरणों से लगता है कि जहां प्रबंधन ईमानदारी से काम करता है वहां VIP संस्कृति की जरूरत नहीं पड़ती। इससे आम भक्तों को उम्मीद बंधती है कि बड़े मंदिर भी इस दिशा में सोच सकते हैं।

VIP कल्चर कब से तेज हुआ?

VIP दर्शन की प्रथा पुरानी है लेकिन पिछले दस-पंद्रह सालों में यह बहुत तेजी से बढ़ी है। पहले मंदिरों में भीड़ कम थी इसलिए सबको बराबर मौका मिलता था लेकिन जब तिरुपति और वैष्णो देवी जैसे मंदिरों में सालाना एक करोड़ से ज्यादा भक्त आने लगे तो प्रबंधन ने अलग लाइन और पैसे वाली सुविधा शुरू कर दी। दो हजार दस के आसपास डिजिटल बुकिंग और पर्यटन बढ़ने से यह और फैला। मंदिरों को रखरखाव और विकास के लिए पैसा चाहिए था इसलिए VIP टिकट से करोड़ों रुपये जमा होने लगे। दो हजार पच्चीस में प्रयागराज महाकुंभ में हुई भीड़भाड़ और दुर्घटना के बाद योगी सरकार ने VIP व्यवस्था पर रोक लगा दी। उपराष्ट्रपति धनखड़ ने जनवरी दो हजार पच्चीस में खुलकर कहा कि मंदिरों में VIP संस्कृति भगवान की समानता के खिलाफ है। सुप्रीम कोर्ट ने भी अपनी राय दी कि VIP दर्शन की जरूरत नहीं लेकिन राज्यों पर छोड़ दिया। लोकल सर्कल्स सर्वे में पता चला कि दस में से आठ लोग धार्मिक जगहों पर VIP कल्चर का सामना करते हैं। इस तेजी का कारण बढ़ती भीड़ और पैसा कमाने की सोच है लेकिन अब भक्त और नेता दोनों इसे गलत मानने लगे हैं।

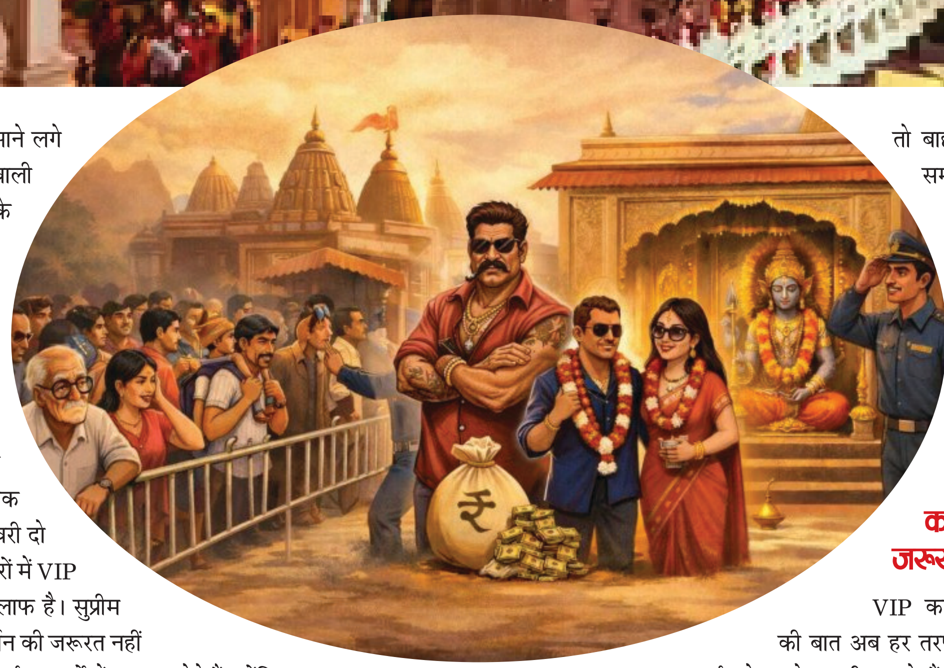

छोटे-बड़े का भेदभाव मंदिर में क्या संदेश देता है?

मंदिर जैसी पवित्र जगह पर छोटे-बड़े या अमीर-गरीब का भेदभाव बहुत गहरी सोचने वाली बात है। भगवान के सामने सब बराबर होते हैं यह हमारी संस्कृति का मूल संदेश है लेकिन VIP कल्चर से लगता है कि भक्ति भी पैसे और पद पर निर्भर है। इससे सामान्य भक्त निराश होते हैं क्योंकि वे घंटों लाइन में खड़े रहते हैं जबकि कुछ लोग जल्दी दर्शन कर ले जाते हैं। यह समाज को गलत संदेश देता है कि धनवान लोग हर जगह आगे हैं यहां तक कि देवता के दरबार में भी। कई लोग कहते हैं कि इससे भक्ति का भाव कम हो जाता है और मंदिर सिर्फ कमाई का साधन बन जाते हैं। दूसरी तरफ प्रबंधन का तर्क है कि भीड़ नियंत्रित करने और सुरक्षा के लिए कुछ खास व्यवस्था जरूरी है। लेकिन उपराष्ट्रपति और सुप्रीम कोर्ट जैसे लोग कह चुके हैं कि यह समानता के सिद्धांत के खिलाफ है। मंदिर हमें सिखाते हैं कि सब एक हैं फिर भेदभाव क्यों? यह सवाल समाज के हर वर्ग को सोचने पर मजबूर करता है। अगर हम मंदिरों में ही बराबरी नहीं दिखा पाए तो बाहर की दुनिया में समानता की उम्मीद कैसे रखें? यह प्रथा हमें याद दिलाती है कि सच्ची भक्ति दिल से होती है न कि पास से।

क्या इस प्रथा को बदलने की जरूरत है?

VIP कल्चर को बदलने की बात अब हर तरफ हो रही है और कई लोग इसे जरूरी मानते हैं। जहां बैंकेबिहारी और कुछ अन्य मंदिरों ने इसे बंद किया वहां भक्तों ने राहत महसूस की। बड़े मंदिरों को भीड़ प्रबंधन के नए तरीके अपनाने चाहिए जैसे ऑनलाइन बुकिंग बढ़ाना या समय बढ़ाना ताकि सबको बराबर मौका मिले। मंदिरों की आमदनी कम नहीं होगी अगर वे सच्ची भक्ति पर जोर दें। सुप्रीम कोर्ट और उपराष्ट्रपति की राय से लगता है कि बदलाव की दिशा साफ है। भक्तों को भी लगता है कि मंदिर धार्मिक जगह है न कि VIP क्लब। अगर हम सब मिलकर इस प्रथा पर सवाल उठाएं तो प्रबंधन सुन सकता है। अंत में मंदिर हमें एकता सिखाते हैं न कि विभेद। यह कल्चर अगर बदला तो भक्ति का असली अर्थ फिर से जीवित हो सकता है।

हम कौन हैं असल में?

ब्रह्मस्वरूपिणी ऋतु खुशबू जी के जीवन सूत्र

मनुष्य का जीवन केवल इस नश्वर शरीर तक सीमित नहीं है। हम शाश्वत, सनातन और अविनाशी आत्मा हैं, जो न कभी जन्म लेती है और न ही कभी नष्ट होती है। शरीर बदलता है, परिस्थितियां बदलती हैं, समय बदलता है, लेकिन आत्मा का अस्तित्व अडिग और स्थायी रहता है।जब मनुष्य अपने आपको केवल शरीर मान लेता है, तब वह भय, दुख, असुरक्षा और मोह में उलझ जाता है। लेकिन जैसे ही वह यह समझता है कि उसका वास्तविक स्वरूप आत्मा है, तब उसके भीतर एक अद्भुत शांति और स्थिरता का जन्म होता है। यह आत्मबोध ही जीवन को दिशा देता है और उसे सार्थक बनाता है।

आत्मबोध का मार्ग

आत्मा के इस सत्य को समझने के लिए शिक्षा और संस्कार अत्यंत आवश्यक हैं। शिक्षा केवल पढ़ाई-लिखाई नहीं है, बल्कि यह हमारे भीतर छिपे हुए ज्ञान को जागृत करने का माध्यम है। यह हमें जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझने की क्षमता प्रदान करती है।संस्कार शिक्षा को पूर्णता देते हैं। बिना संस्कार के शिक्षा अधूरी है, क्योंकि वह केवल बुद्धि का विकास करती है, जबकि संस्कार हृदय को परिष्कृत करते हैं। जब शिक्षा और संस्कार का समन्वय होता है, तब एक संतुलित और आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण होता है।आज आवश्यकता इस बात की है कि हम शिक्षा को केवल रोजगार का साधन न मानें, बल्कि उसे आत्मज्ञान और चरित्र निर्माण का माध्यम बनाएं।

स्वयं की पहचान है जरूरी

ज्ञान वह दीपक है, जो अज्ञान के अंधकार को दूर करता है। जब मनुष्य ज्ञान प्राप्त करता है, तब वह अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने लगता है। उसे यह समझ में आता है कि वह केवल सीमित शरीर नहीं, बल्कि अनंत चेतना का अंश है।ज्ञान हमें यह भी सिखाता है कि जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक सुख प्राप्त करना नहीं है, बल्कि आत्मिक उन्नति करना है। जब मनुष्य इस सत्य को समझ लेता है, तब उसका जीवन एक नई दिशा में अग्रसर हो जाता है।

हम सभी एक-दूसरे से जुड़े हैं

यह संसार परस्पर निर्भरता पर आधारित है। कोई भी व्यक्ति पूर्णतः स्वतंत्र नहीं है। हम सभी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। चाहे वह समाज हो, परिवार हो या प्रकृति।जब तक हम मिल-जुलकर नहीं रहेंगे, तब तक सच्चा सुख प्राप्त नहीं कर सकते। यदि हमारे आसपास का वातावरण अशांत, असंतुलित और अस्वच्छ होगा, तो उसका प्रभाव हमारे जीवन पर अवश्य पड़ेगा।इसलिए आवश्यक है कि हम सहयोग, प्रेम और सामंजस्य के साथ जीवन जिएं। यही सच्चे सुख का आधार है।

जीवन की आधारशिला है प्रकृति

प्रकृति हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। वह केवल संसाधनों का स्रोत नहीं, बल्कि जीवनदायिनी शक्ति है। वह हमें भोजन, जल, वायु और जीवन के लिए आवश्यक सभी साधन प्रदान करती है।कभी वह माता बनकर हमारा पालन करती है, कभी मित्र बनकर हमारा साथ देती है और कभी सेविका बनकर हमारी आवश्यकताओं को पूरा करती है। प्रकृति का यह बहुआयामी स्वरूप हमें सिखाता है कि जीवन में संतुलन और समर्पण कितना महत्वपूर्ण है।

मानव की लालसा और प्रकृति का असंतुलन

दुर्भाग्यवश, मनुष्य ने अपनी असीमित इच्छाओं के कारण प्रकृति का अत्यधिक दोहन किया है। हमने विकास के नाम पर जंगलों को काटा, नदियों को प्रदूषित किया और वायु को विषाक्त बना दिया।इसका परिणाम आज हम जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं और स्वास्थ्य संकटों के रूप में देख रहे हैं। यह सब इस बात का संकेत है कि हमने प्रकृति के साथ संतुलन खो दिया है।अब समय आ गया है कि हम अपनी सोच को बदलें और प्रकृति के संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाएं।

ज्ञान की तीर्थ हैं पुस्तकें

पुस्तकें केवल कागज और शब्दों का संग्रह नहीं होतीं, बल्कि वे ज्ञान का भंडार होती हैं। उन्हें तीर्थ और देव प्रतिमा की तरह माना जा सकता है, क्योंकि उनमें दिव्य ज्ञान और चेतना समाई होती है।जब मनुष्य समस्याओं में घिर जाता है, तब यही पुस्तकें उसका मार्गदर्शन करती हैं। वे उसे सही दिशा दिखाती हैं और जीवन के जटिल प्रश्नों का समाधान प्रदान करती हैं।अच्छी पुस्तकों का अध्ययन व्यक्ति के विचारों को परिष्कृत करता है और उसे एक बेहतर इंसान बनने में सहायता करता है।

सकारात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता

आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है। हर व्यक्ति किसी न किसी लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। कोई धन कमाना चाहता है, कोई पद और प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहता है, तो कोई अपने सपनों को साकार करना चाहता है।इस दौड़ में शामिल होना स्वाभाविक है, लेकिन यह आवश्यक है कि हमारी प्रतिस्पर्धा स्वस्थ और सकारात्मक हो। यदि प्रतिस्पर्धा ईर्ष्या, तनाव और असंतोष से भरी हो, तो यह हमें थका देती है।वहीं यदि इसमें प्रेरणा, परिश्रम और आत्मविश्वास हो, तो यह हमें सफलता की ओर ले जाती है और हमारे व्यक्तित्व को निखारती है।

सच्चे सुख की कुंजी

सच्चा सुख बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि हमारे भीतर स्थित है। जब हमारा मन शांत, संतुलित और संतुष्ट होता है, तभी हम वास्तविक सुख का अनुभव कर सकते हैं।इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने विचारों को सकारात्मक रखें, अपने जीवन में संतुलन बनाए रखें और अपने भीतर की शांति को बनाए रखें।ध्यान, आत्मचिंतन और सत्संग जैसे साधन हमें इस दिशा में आगे बढ़ने में सहायता करते हैं।

मानवता का मार्ग

मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य केवल स्वयं के लिए जीना नहीं है, बल्कि दूसरों के लिए भी जीना है। प्रेम, करुणा और सेवा के बिना जीवन अधूरा है।जब हम दूसरों की सहायता करते हैं, उनके दुख को समझते हैं और उनके साथ खड़े होते हैं, तब हमारे जीवन में एक गहरी संतुष्टि का अनुभव होता है।यही मानवता का सच्चा मार्ग है, जो हमें आत्मिक उन्नति की ओर ले जाता है।

आत्मबोध से ही मिलती है पूर्णता

अंततः, जीवन की सभी समस्याओं का समाधान आत्मबोध में निहित है। जब हम अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लेते हैं, तब हमारे भीतर एक नई चेतना का उदय होता है।यह चेतना हमें सही दिशा दिखाती है, हमें प्रकृति के साथ संतुलन बनाना सिखाती है और हमें मानवता के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है।इसलिए आवश्यक है कि हम शिक्षा, संस्कार, ज्ञान और प्रकृति के संरक्षण को अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाएं। तभी हम एक संतुलित, सुखमय और सार्थक जीवन जी सकते हैं।जब मनुष्य स्वयं को जान लेता है, तब वह सम्पूर्ण सृष्टि को समझने लगता है।

80 हजार करोड़ खर्च करते हैं, फिर सरकारी स्कूल क्यों घट रहे? यूपी शिक्षा की पूरी समीक्षा

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हाल ही में कहा कि राज्य में स्कूली शिक्षा पर 80 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा राशि खर्च की जा रही है। यह पैसा बच्चों को बेहतर पढ़ाई और अच्छे मौके देने के लिए दिया जाता है। सरकार का कहना है कि इस खर्च से स्कूलों में सुधार हो रहा है। ड्रॉपआउट यानी बीच में पढ़ाई छोड़ने की दर 19 प्रतिशत से घटकर 3 प्रतिशत रह गई है। पिछले कुछ सालों में 60 लाख नए बच्चों का नामांकन हुआ है।

बजट 2026-27 में बेसिक शिक्षा के लिए करीब 80 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया है। इसमें स्मार्ट स्कूल बनाने, लड़कियों के लिए अलग स्कूल और फ्री यूनिफॉर्म, किताबें जैसी सुविधाएं शामिल हैं। सरकार का लक्ष्य है कि हर बच्चा स्कूल जाए और अच्छी शिक्षा पाए। योगी जी ने शिक्षकों से अपील की कि अब परिणाम दिखाने का समय है। पहले की सरकारों में शिक्षा की हालत खराब थी, लेकिन अब बदलाव आ रहा है। स्कूल चलो अभियान शुरू किया गया है ताकि गांव-गांव में बच्चे स्कूल पहुंचें। कुल मिलाकर सरकार शिक्षा को प्राथमिकता दे रही है और पैसा लगाकर सुधार ला रही है। लेकिन लोग पूछ रहे हैं कि इतना खर्च होने के बावजूद सरकारी स्कूल कम क्यों हो रहे हैं? यह सवाल उठना लाजमी है क्योंकि आम आदमी को लगता है कि स्कूल घटने से बच्चे प्रभावित हो सकते हैं। सरकार कहती है कि खर्च सही दिशा में हो रहा है और नतीजे आने वाले हैं।

योगी आदित्यनाथ का दावा: स्कूली शिक्षा पर भारी खर्च

सरकारी स्कूलों की संख्या: क्या हो रही है कमी?

उत्तर प्रदेश में सरकारी स्कूलों की कुल संख्या पिछले कुछ सालों में लगभग स्थिर रही है। UDISE+ 2024-25 के आंकड़ों के मुताबिक करीब 1.37 लाख सरकारी स्कूल हैं। 2021-22 से 2024-25 तक यह संख्या 1,37,024 से 1,37,172 के आसपास रही। यानी बड़े पैमाने पर स्कूल बंद नहीं हुए। लेकिन 2025 में सरकार ने कम छात्रों वाले स्कूलों को मर्ज करने यानी जोड़ने का फैसला लिया। करीब 10 हजार प्राइमरी और अपर प्राइमरी स्कूलों को पास के बड़े स्कूलों के साथ जोड़ा गया जहां छात्र कम थे। कारण था संसाधनों का बेहतर इस्तेमाल। कई स्कूलों में 50 से कम बच्चे थे, वहां एक टीचर पर कई क्लास चलती थीं। सरकार कहती है कि मर्जर से बच्चे बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर, ज्यादा शिक्षक और अच्छी पढ़ाई पाएंगे। स्कूल बंद नहीं हो रहे, सिर्फ पेयरिंग हो रही है। इससे बालवाटिका यानी प्ले स्कूल भी बनाए जा रहे हैं। लेकिन कुछ लोग चिंतित हैं।

विरोधी पार्टियां कहती हैं कि इससे गरीब बच्चे, खासकर लड़कियां, स्कूल जाने में दिक्कत महसूस करेंगी क्योंकि दूरी बढ़ सकती है। कुल स्कूलों की संख्या में प्राइवेट स्कूल बढ़ रहे हैं। सरकारी स्कूलों में नामांकन घटा है। 2021-22 में सरकारी स्कूलों में 1.90 करोड़ बच्चे थे जो 2024-25 में घटकर 1.48 करोड़ रह गए। लोग प्राइवेट स्कूलों की ओर जा रहे हैं। सरकार का तर्क है कि यह रेशनलाइजेशन है जो NEP 2020 के मुताबिक है। इससे शिक्षा की क्वालिटी सुधरेगी। आंकड़े दिखाते हैं कि छोटे स्कूलों की समस्या सुलझ रही है। लेकिन आम लोगों को लगता है कि स्कूलों की पहुंच कम न हो।

शिक्षकों की भर्ती: पिछले 5 सालों में कितनी हुई?

पिछले पांच सालों में उत्तर प्रदेश सरकार ने सरकारी स्कूलों के लिए बड़ी संख्या में शिक्षक भर्ती की है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अनुसार शिक्षा विभाग में कुल 1.60 लाख से ज्यादा भर्तियां हुई हैं। बेसिक शिक्षा परिषद के लिए 69 हजार सहायक शिक्षकों को नियुक्ति पत्र दिए गए जो पिछले चार साल से स्कूलों में पढ़ा रहे हैं। इससे पहले 42 हजार शिक्षकों की भर्ती हुई थी। सेकेंडरी शिक्षा में भी 44 हजार से ज्यादा शिक्षक नियुक्त किए गए। LT ग्रेड टीचर भर्ती जैसी प्रक्रियाएं भी चल रही हैं। सरकार का दावा है कि इससे टीचर-स्टूडेंट रेशियो सुधरा है। प्राइमरी स्तर पर PTR अब 20:1 के आसपास है। कुल शिक्षकों की संख्या बढ़कर 16 लाख से ज्यादा हो गई है। लेकिन कुछ जगहों पर अभी भी वैकेंसी है। पहले 85 हजार से ज्यादा पद खाली थे। सरकार कहती है कि भर्ती प्रक्रिया पारदर्शी और तेज की गई है। UPSSSC और UPPSC के जरिए परीक्षाएं हो रही हैं। इससे युवाओं को नौकरी भी मिल रही है।

शिक्षकों को ट्रेनिंग दी जा रही है ताकि वे आधुनिक तरीके से पढ़ा सकें। स्मार्ट क्लासरूम और डिजिटल टूल्स का इस्तेमाल बढ़ रहा है। फिर भी कुछ शिक्षक संघ कहते हैं कि भर्ती में देरी हुई और सभी पद नहीं भरे। लेकिन सरकार का जवाब है कि 2017 के बाद से 1.26 लाख से ज्यादा नए शिक्षक आए हैं। यह संख्या पिछले पांच साल में और बढ़ी। कुल मिलाकर भर्ती से स्कूलों में पढ़ाई बेहतर हो रही है। बच्चे ज्यादा शिक्षकों से सीख पा रहे हैं। यह शिक्षा सुधार का बड़ा कदम है।

स्कूल मर्जर नीति: फायदे बनाम चुनौतियां

2025 में UP सरकार ने कम छात्र वाले स्कूलों को मर्ज करने की नीति शुरू की। जिन स्कूलों में 50 से कम बच्चे थे उन्हें पास के स्कूल से जोड़ा गया। सरकार कहती है कि इससे संसाधन बचेगा, शिक्षकों का बेहतर उपयोग होगा और बच्चे अच्छी सुविधाओं का फायदा उठाएंगे। एक टीचर हर क्लास में रहेगा, सोशल इंटरैक्शन बढ़ेगा और पढ़ाई की क्वालिटी सुधरेगी। मर्जर के बाद बचे भवन को बालवाटिका बनाने में इस्तेमाल किया जा रहा है। 70 हजार से ज्यादा ऐसे प्ले स्कूल operational हो गए। कोई शिक्षक पद कम नहीं हुआ। यह NEP 2020 के हिसाब से है। लेकिन विरोध भी हुआ। विपक्षी पार्टियां कहती हैं कि यह गरीब बच्चों की पढ़ाई पर असर डालेगा। खासकर गांवों में लड़कियां स्कूल दूर होने से नहीं जा पाएंगी। कुछ अभिभावक चिंतित हैं कि बच्चे लंबा सफर करेंगे। कोर्ट में भी मामला गया जहां सरकार ने सफाई दी कि कोई स्कूल बंद नहीं हो रहा, सिर्फ पेयरिंग है। आंकड़े बताते हैं कि छोटे स्कूलों में नामांकन कम था इसलिए मर्जर जरूरी था। इससे ड्रॉपआउट बढ़ने का डर है लेकिन सरकार कहती है कि सुविधाएं बेहतर होने से बच्चे ज्यादा आएंगे। कुल मिलाकर नीति का मकसद शिक्षा को मजबूत करना है। लेकिन लागू करते समय दूरी, परिवहन और लड़कियों की सुरक्षा का ध्यान रखना होगा। अगर सही से किया गया तो फायदा होगा, वरना चुनौतियां बढ़ सकती हैं। यह बहस शिक्षा की पहुंच और क्वालिटी के बीच संतुलन की याद दिलाती है।

UP में सरकारी स्कूलों की समीक्षा: आगे क्या?

UP की सरकारी स्कूल व्यवस्था पर नजर डालें तो तस्वीर मिश्रित है। 80 हजार करोड़ से ज्यादा खर्च, बड़ी भर्तियां और ड्रॉपआउट में कमी जैसे सकारात्मक बदलाव दिख रहे हैं। PTR सुधरा, लड़कियों की भागीदारी बढ़ी और इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार हुआ। लेकिन सरकारी स्कूलों में नामांकन घट रहा है क्योंकि प्राइवेट स्कूल आकर्षक लग रहे हैं। स्कूल मर्जर से संसाधन बच रहे हैं लेकिन आम आदमी को लगता है कि पहुंच कम न हो। UDISE+ डेटा दिखाता है कि कुल स्कूल बढ़े लेकिन सरकारी हिस्सा स्थिर रहा। शिक्षा पर निवेश बढ़ाने के साथ-साथ क्वालिटी चेक और पहुंच बनाए रखना जरूरी है। सरकार स्मार्ट स्कूल और स्किल डेवलपमेंट पर फोकस कर रही है जो सही दिशा है। लेकिन गांवों में शिक्षक की नियमित उपस्थिति, बुनियादी सुविधाएं और अभिभावकों का भरोसा बनाना बाकी है। अगर खर्च का सही उपयोग हो और मर्जर के बाद भी बच्चे स्कूल पहुंचें तो UP शिक्षा में नई ऊंचाइयां छू सकता है। यह सिर्फ आंकड़ों का खेल नहीं, बल्कि बच्चों के भविष्य का सवाल है। सोचने वाली बात यह है कि पैसा लगाने के साथ लोगों की भागीदारी भी बढ़े तो असली बदलाव आएगा।

पत्थरों में कैद 160 करोड़ साल की कहानी

सलखन जीवाश्म पार्क की जमीनी हकीकत

@ अभिषेक चौबे

सोनभद्र के रॉबर्ट्सगंज से करीब 15-17 किलोमीटर का सफर तय करने के बाद जब हम सलखन गांव की ओर बढ़े, तो रास्ता धीरे-धीरे एक सामान्य ग्रामीण माहौल से निकलकर इतिहास के गर्भ में उतरता हुआ महसूस होने लगा। यहां कोई भव्य गेट नहीं, कोई बड़ी भीड़ नहीं, कोई शोर नहीं। लेकिन जैसे ही आप अंदर कदम रखते हैं, ऐसा लगता है जैसे समय ठहर या रुक गया हो। यह जगह सिर्फ एक पार्क नहीं, बल्कि धरती के 160 करोड़ साल पुराने अतीत की एक जीवित किताब है।

जब यहां समुद्र लहराता था

आज जहां सूखी चट्टानें और पत्थर नजर आते हैं, वैज्ञानिकों का दावा है कि करोड़ों साल पहले यहां समुद्र हुआ करता था। कल्पना कीजिए कि यही धरती, जहां आज आप खड़े हैं, कभी पानी के नीचे थी, और वहीं जीवन की पहली हलचल शुरू हुई थी।

शोध बताते हैं कि यहां जीवन की शुरुआत काई यानी एलगाई के रूप में हुई। वही काई धीरे-धीरे विकसित होकर आज के जटिल जीवन का आधार बनी। इस सोच से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि हम जिस जमीन पर चल रहे हैं, वहीं कभी जीवन ने पहली सांस ली होगी।

पत्थर नहीं, समय के साक्ष्य हैं ये जीवाश्म

सलखन में मौजूद जीवाश्म पहली नजर में सामान्य पत्थर जैसे लगते हैं। लेकिन जब आप ध्यान से देखते हैं, तो उनमें गोल-गोल छल्ले, अजीब आकृतियां और बनावट नजर आती हैं। स्थानीय लोग इन्हें पत्थर के फूल या पत्थर के पेड़कहते हैं।

वैज्ञानिक भाषा में इन्हें स्ट्रोमैटोलाइट्स कहा जाता है ,ऐसे जीवाश्म जो साइनोबैक्टीरिया नाम के सूक्ष्म जीवों की गतिविधियों से बने हैं। यही वे जीव थे जिन्होंने धीरे-धीरे पृथ्वी के वातावरण में ऑक्सीजन पैदा करने की प्रक्रिया शुरू की ।मतलब साफ है कि ये पत्थर सिर्फ पत्थर नहीं हैं, ये उस दौर के गवाह हैं जब पृथ्वी पर जीवन अपने सबसे शुरुआती रूप में था।

> सलखन जीवाश्म पार्क सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक बेहद महत्वपूर्ण भू-वैज्ञानिक स्थल है। यहां पाए जाने वाले स्ट्रोमैटोलाइट्स इस बात का प्रमाण हैं कि पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत किस तरह हुई। अगर इसे सही तरीके से संरक्षित और विकसित किया जाए, तो यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जीवित प्रयोगशाला बन सकता है। लेकिन सबसे बड़ी चुनौती यही है कि विकास के नाम पर इसकी मौलिकता को नुकसान न पहुंचे।
>
> **डॉ. अशोक कुमार वर्मा (प्राचीन जीवाश्म विशेषज्ञ)**

1933 से लेकर आज तक जारी है ख़ोज

इस जगह की खोज पहली बार 1933 में Geological Survey of India ने की थी। उस समय शायद किसी ने नहीं सोचा होगा कि यह स्थल एक दिन दुनिया के सबसे प्राचीन जीवाश्म स्थलों में गिना जाएगा।

फिर 2002 में दुनिया के 40 से ज्यादा देशों के वैज्ञानिक यहां पहुंचे। उन्होंने यहां रिसर्च किया, सैंपल लिए, अध्ययन किया और इस जगह को वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण माना ।कई विशेषज्ञ तो यहां तक दावा करते हैं कि यह दुनिया के प्रसिद्ध Yellowstone National Park से भी कहीं ज्यादा पुराना है। अगर यह दावा पूरी तरह प्रमाणित होता है, तो सलखन सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक असाधारण धरोहर बन सकता है।

जमीनी सच्चाई तो बहुत अजीब है

कागजों और दावों से आगे बढ़कर जब हमने यहां की वास्तविक स्थिति को समझने की कोशिश की, तो तस्वीर थोड़ी अलग नजर आई ।पार्क में कुछ हद तक साफ-सफाई जरूर दिखाई दी। लेकिन जैसे ही आप थोड़ा और भीतर जाते हैं, सुविधाओं की कमी साफ महसूस होने लगती है ।न तो पीने के पानी की पर्याप्त व्यवस्था है, न ही बैठने के लिए उचित स्थान।

कहीं-कहीं टूटी हुई पगडंडियां, और सूचना बोर्ड भी सीमित। अगर कोई पर्यटक पहली बार आता है, तो उसे यह समझने में मुश्किल हो सकती है कि वह जिस जगह खड़ा है, उसका महत्व क्या है।

पर्यटकों की नजर से सलखन

वहां मौजूद कुछ पर्यटकों से बात करने पर उनकी भावनाएं भी सामने आईं ।एक युवक, जो वाराणसी से अपने दोस्तों के साथ यहां आया था, उसका नाम सुभम था वो कहता है कि जगह बहुत अद्भुत है, लेकिन इसे जिस तरह से विकसित होना चाहिए, वैसा अभी नहीं हुआ है। अगर यहां गाइड, बेहतर जानकारी और बेसिक सुविधाएं हों, तो यह जगह इंटरनेशनल लेवल की बन सकती है ।एक अन्य परिवार, जो अपने बच्चों के साथ यहां घूमने आया था, उनकी चिंता थोड़ी अलग थी , वो परिवार पढ़ा - लिखा लग रह था। शायद किसी सरकारी पद पर था। परिवार की एक मेंबर वकील थी उनका कहना था कि इतिहास तो बहुत बड़ा है यहां, लेकिन बच्चों के लिए समझाने का कोई सिस्टम नहीं है। अगर म्यूजियम या इंटरैक्टिव सेंटर हो, तो ज्यादा लोग जुड़ पाएंगे।

कैसे होगी बड़े सपनों की शुरुआत

जिला प्रशासन इस स्थल को लेकर गंभीर नजर आता है। करीब 2 करोड़ रुपये की लागत से यहां बुनियादी सुविधाओं के विकास की योजना बनाई गई है ।इसमें कैंटीन, शौचालय, पेयजल, साफ-सफाई और एक छोटे म्यूजियम की व्यवस्था शामिल है।

योजना यह भी है कि इस जगह को एक ग्लोबल टूरिस्ट डेस्टिनेशन के रूप में विकसित किया जाए ।जिलाधिकारी ने मीडिया में आकर कहा था कि इस स्थल को UNESCO वर्ल्ड हेरिटेज का दर्जा दिलाने के लिए प्रक्रिया तेज कर दी गई है। अगर ऐसा होता है, तो यह न केवल सोनभद्र बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश के लिए गर्व की बात होगी।

क्या UNESCO का सपना हकीकत बनेगा?

कागजों पर योजनाएं बनना एक बात है, लेकिन उनका जमीन पर उतरना दूसरी। सलखन के मामले में भी यही सबसे बड़ा सवाल है ।क्या यहां अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं समय पर विकसित हो पाएंगी ?क्या इस धरोहर को संरक्षित करते हुए पर्यटन को बढ़ाया जा सकेगा ?क्या स्थानीय लोगों को इसका लाभ मिल पाएगा ?ये सभी सवाल अभी खुले हैं ।सलखन के आसपास रहने वाले लोगों के लिए यह पार्क सिर्फ इतिहास नहीं, बल्कि भविष्य की उम्मीद भी है ।एक स्थानीय दुकानदार ने बताया कि "अगर यहां ज्यादा लोग आएंगे, तो हमारे रोजगार के मौके भी बढ़ेंगे।

अभी तो बहुत कम लोग आते हैं, लेकिन अगर सरकार ध्यान दे, तो यह जगह बदल सकती है।"लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी जोड़ा -बस इतना ध्यान रखना होगा कि विकास के नाम पर इस जगह को नुकसान न पहुंचे ।किसी भी ऐतिहासिक और वैज्ञानिक स्थल के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही होती है विकास और संरक्षण के बीच संतुलन ।अगर यहां भीड़ बढ़ती है, तो इससे जीवाश्मों को नुकसान पहुंचने का खतरा रहेगा। और अगर इसे पूरी तरह बंद रखा जाए, तो यह लोगों की पहुंच से दूर हो जाएगा ।इसलिए जरूरी है कि एक संतुलित मॉडल अपनाया जाए जहां लोग भी आएं, सीखें भी, और धरोहर सुरक्षित भी रहे।

एक अनकहा एहसास

जब आप इस पार्क में कुछ देर शांत बैठते हैं, तो एक अजीब सा एहसास होता है। ऐसा लगता है जैसे ये पत्थर कुछ कह रहे हों। एक बहुत पुरानी कहानी, जिसे हमने अब तक ठीक से सुना ही नहीं ।यह सिर्फ विज्ञान नहीं है, यह एक भावनात्मक जुड़ाव भी है। अपनी जड़ों से, अपने अतीत से, और उस शुरुआत से जहां से जीवन ने अपना पहला कदम बढ़ाया था।

हंसी और डर का पुराना जादू लौटा

भूत बंगला का ट्रेलर दिल छू गया
14 साल बाद क्या लौटेगा वही क्लासिक अंदाज?

@ सौम्या चौबे

लंबे इंतजार के बाद आखिरकार भूत बंगला का ट्रेलर सामने आ चुका है और इसे देखते ही एक बात साफ हो जाती है यह फिल्म सिर्फ एक नई रिलीज नहीं, बल्कि उस पुराने दौर की वापसी है, जब कॉमेडी दिल से निकलती थी और दर्शकों के चेहरे पर सहज मुस्कान ले आती थी।अक्षय और प्रियदर्शन की जोड़ी एक बार फिर साथ आई है। यह वही जोड़ी है जिसने हेरा फेरी, गरम मसाला, भागम भाग और भूल भुलैया जैसी फिल्मों के जरिए दर्शकों को हंसी का असली स्वाद चखाया था। अब करीब 14 साल बाद दोनों फिर एक साथ लौटे हैं, तो उम्मीदें भी उसी हिसाब से बड़ी हैं।

सादगी में छुपा असली मजा

ट्रेलर की शुरुआत होते ही यह एहसास हो जाता है कि यह फिल्म किसी भारी-भरकम दिखावे या तकनीकी चकाचौंध पर नहीं, बल्कि कहानी और किरदारों की ताकत पर टिकी है।यह आपको सीधे उस पुराने समय में ले जाता है, जब कॉमेडी में सहजता होती थी और हर सीन में एक स्वाभाविक प्रवाह नजर आता था। डर और हंसी का जो संतुलन इसमें दिखता है, वह बिल्कुल बनावटी नहीं लगता।सबसे खास बात यह है कि इसमें कुछ भी जबरदस्ती ठूंसा हुआ नहीं लगता। हर मजाक, हर स्थिति अपने आप पैदा होती है और यही इसे खास बनाती है।

अक्षय कुमार का पुराना अंदाज-फिर वही टाइमिंग

अक्षय को इस तरह के किरदारों में देखना हमेशा सुखद अनुभव रहा है। उनकी कॉमिक टाइमिंग, चेहरे के हाव-भाव और संवाद बोलने का अंदाज—सब कुछ इस ट्रेलर में फिर उसी पुराने रंग में नजर आता है।ऐसा लगता है जैसे वह अपने उसी दौर में लौट आए हैं, जहां उन्होंने एक के बाद एक सफल कॉमेडी फिल्में दी थीं।परेश रावल और राजपाल यादव-हंसी की गारंटी फिल्म की सबसे बड़ी ताकत इसकी कास्टिंग है। परेश रावल और राजपाल जैसे कलाकार जब पर्दे पर होते हैं, तो हंसी अपने आप आ जाती है।दोनों की मौजूदगी इस ट्रेलर को और मजबूत बनाती है। उनकी टाइमिंग, संवाद और आपसी तालमेल ऐसा लगता है जैसे सालों से साथ काम कर रहे हों—जो कि सच भी है।

अन्य कलाकारों का भी दमदार साथ

इस फिल्म में कई बड़े कलाकार भी नजर आने वाले हैं इन सभी कलाकारों की मौजूदगी फिल्म को और दिलचस्प बनाती है। हर किरदार की अपनी एक जगह और अहमियत नजर आती है।डर और हंसी का संतुलन-यही है खासियत। इस ट्रेलर की सबसे बड़ी खासियत यही है कि इसमें डर और कॉमेडी का संतुलन बहुत ही सहज तरीके से बनाया गया है।कहीं भी ऐसा नहीं लगता कि डर को ज्यादा बढ़ा दिया गया है या कॉमेडी को जबरदस्ती डाला गया है। दोनों एक साथ चलते हैं और दर्शक को बांधे रखते हैं।

कहानी का अंदाजा, लेकिन रहस्य बरकरार

ट्रेलर कहानी की पूरी परत नहीं खोलता, लेकिन इतना जरूर दिखा देता है कि फिल्म किस तरह के माहौल में चलने वाली है।यह दर्शकों की जिज्ञासा को बनाए रखता है, जो किसी भी अच्छे ट्रेलर की सबसे बड़ी सफलता होती है। इस फिल्म को देखते हुए बार-बार पुरानी फिल्मों की याद आती है, लेकिन साथ ही यह भी महसूस होता है कि इसमें कुछ नया भी है। फिल्म के निर्माताओं ने घोषणा की है कि 16 अप्रैल 2026 की रात 9 बजे से इसके विशेष प्रदर्शनों की शुरुआत हो जाएगी।

काश मैं भी होता ... धुरंधर की सफलता के बीच परेश रावल ने छुआ सबका दिल

कभी-कभी सिनेमा सिर्फ पर्दे पर नहीं चलता, वह कलाकारों के दिलों में भी अपनी जगह बना लेता है। कुछ ऐसा ही हुआ है इन दिनों, जब निर्देशक आदित्य धर की फिल्म धुरंधर और उसके दूसरे भाग धुरंधरः द रिवेंज की जबरदस्त सफलता के बीच एक बयान ने सबका ध्यान खींच लिया है।यह बयान है दिग्गज अभिनेता परेश रावल का एक ऐसा अभिनेता, जो खुद कई यादगार फिल्मों का हिस्सा रह चुका है। लेकिन इस बार उन्होंने एक ऐसी बात कही, जिसमें एक कलाकार की सच्ची भावना साफ झलकती है।

"पहली बार लगा कि मुझे इसमें होना चाहिए था"

परेश रावल ने हाल ही में बातचीत के दौरान कहा कि जब उन्होंने 'धुरंधर' देखी, तो उन्हें पहली बार ऐसा महसूस हुआ कि काश वे भी इस फिल्म का हिस्सा होते।उन्होंने बताया कि उन्होंने फिल्म का पहला भाग दो बार देखा है और दूसरे भाग को भी देख चुके हैं। इतना ही नहीं, वह इसे फिर से देखने की इच्छा भी रखते हैं।उनके शब्दों में-यह सिर्फ एक फिल्म नहीं, बल्कि एक गाथा है। एक ऐसी कहानी, जो दर्शकों को सिर्फ मनोरंजन नहीं देती, बल्कि उन्हें भीतर तक छू जाती है।

एक कलाकार की ईमानदार प्रतिक्रिया

अक्सर बड़े कलाकार दूसरे कलाकारों या फिल्मों की तारीफ करते हैं, लेकिन परेश रावल के इस बयान में कुछ अलग है। इसमें कोई औपचारिकता नहीं, कोई दिखावा नहीं बस एक सच्ची भावना है।उन्होंने मजाकिया अंदाज में यह भी कहा कि अगर उन्हें मौका मिलता, तो वह इस फिल्म में एक दिलचस्प किरदार निभाना चाहते।यह बात सुनकर कहीं न कहीं यह एहसास होता है कि सिनेमा, चाहे जितना बड़ा हो जाए, कलाकारों के भीतर का बच्चा हमेशा जिंदा रहता है—जो हर अच्छी कहानी का हिस्सा बनना चाहता है।

धुरंधर एक फिल्म नहीं अनुभव है

धुरंधर की सफलता सिर्फ इसके सितारों या बड़े बजट की वजह से नहीं है। इसकी असली ताकत इसकी कहानी, प्रस्तुति और भावनात्मक गहराई में छुपी है।फिल्म में कई बड़े कलाकार नजर आए हैं, जिन्होंने अपने-अपने किरदारों में जान डाल दी है।खासतौर पर आर माधवन का किरदार दर्शकों के बीच काफी चर्चा में है। बताया जा रहा है कि यह किरदार राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोवाल से प्रेरित है।

उरी से धुरंधर तक एक दिलचस्प कड़ी

दिलचस्प बात यह है कि परेश रावल पहले भी इसी तरह के किरदार से जुड़े रोल निभा चुके हैं। उरी में उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार गोविंद भारद्वाज का किरदार निभाया था, जो काफी हद तक अजीत डोभाल से प्रेरित माना गया था।इस बार धुरंधर में इसी तरह के किरदार को एक अलग अंदाज में प्रस्तुत किया गया है। परेश रावल ने खुद माना कि इन दोनों फिल्मों में ऐसे किरदारों की अलग-अलग व्याख्या देखना दिलचस्प है।परेश रावल का मानना है कि 'धुरंधर' की सफलता के पीछे सिर्फ स्टार कास्ट नहीं, बल्कि इसकी कहानी और प्रस्तुति भी है।फिल्म का पैमाना बड़ा है, लेकिन इसकी आत्मा कहीं न कहीं दर्शकों से जुड़ी रहती है। यही कारण है कि यह फिल्म देश ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी दर्शकों का दिल जीत रही है।

जब दर्शक जुड़ते हैं, तब बनती है हिट फिल्म

किसी भी फिल्म की असली सफलता तभी मानी जाती है, जब दर्शक उससे जुड़ाव महसूस करें। 'धुरंधर' के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है।लोग इसे सिर्फ देख नहीं रहे, बल्कि महसूस कर रहे हैं। शायद यही वजह है कि यह फिल्म लगातार नए रिकॉर्ड बना रही है।

एक अभिनेता की नजर से सिनेमा

परेश रावल का यह बयान हमें यह भी समझाता है कि एक अभिनेता फिल्म को किस नजर से देखता है।जहां आम दर्शक सिर्फ कहानी और मनोरंजन देखते हैं, वहीं एक अभिनेता उसमें किरदार, भावनाएं और अपने लिए संभावनाएं भी खोजता है।और जब एक अनुभवी कलाकार यह कहे कि "काश मैं भी इसका हिस्सा होता", तो यह उस फिल्म की सबसे बड़ी तारीफ मानी जा सकती है।धुरंधर की सफलता ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि अच्छी कहानी और मजबूत प्रस्तुति किसी भी फिल्म को खास बना सकती है।

इतना पवित्र था कि प्रेम ही हो सकता था

यह पिछली सदी के

उम्मीद भरे आख़िरी दिनों की बात है
सदी बदलने से तो यूँ बदलने वाला कुछ नहीं था

पर तुम अचानक मिली जब मुझे
यक़ीन हो चला था

आने वाले समय में बेहतर होगी दुनिया
विलुप्त हुई नदियाँ

दंतकथाओं से निकल धरती पर बहेंगी
बारूद सिर्फ़ दियासलाई बनाने के काम आएगा

और ऐसे ही न जाने कितने सपनों ने
आँखों में घोंसला बना लिया था

मैं साफ़–साफ़ नहीं देख पाता था वक़्त।

तुम किसी आदिम प्यास के स्वप्न में
मेरे भीतर की बावड़ी तक

अनजाने ही आ गई थीं
वहाँ इतना निथरा था जल

यक़ीनन उसमें तुम
रूप अपना ही देख मुग्ध हुईं

वरना पास तुम्हारे वहाँ आने और बैठ जाने की
वाजिब कोई वजह मौजूद नहीं थी

तुम्हारा आना इतना अप्रत्याशित था
मैं नहीं जानता था

किस नाम से पुकारूँ तुम्हें
तुम्हारी गंध को पहले-पहल मैंने

ख़ुशनुमा जंगल की देन समझा
हड़बड़ाहट में मेरे बहुत ज़्यादा बोलने के बाद भी

तुम कुछ भी सुन नहीं पाईं
जानता ही कहाँ था मैं तब स्पर्श की भाषा।

अपने लिए हल्की तरफ़दारी के साथ ही सही

आज भी याद है मुझे सब
और इस बीच दस बरस बीत गए हैं

और प्रेम किसी वायरस की तरह चिह्नित किया जा चुका है
बचाव के लिए हम सभी
ख़ुद को स्मृतिहीन बना रहे हैं
कि कहीं दर्ज न हो पाएँ

एक काँपते हुई पल के थमे हुए रंग
कोई ऐसी ध्वनि जो गूँजती रहे ताउम्र

और काया से परे का कोई स्पर्श
बाक़ी सब भी मिटाए जाने की सहूलियत के साथ

कुछ गीगाबाइट मेमोरी के हवाले रहे
सभी बदल रहे हैं लगातार

प्रेम नहीं
वह आज भी आपको नष्ट करने की क्षमता रखता है

बावजूद इसके कि हम सभी
अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में लगे हैं।

इन दस बरसों में

सभी दस अंकों की एक संख्या में तब्दील हो गए हैं
लगातार चल रहा है

असंख्य संख्याओं के बीच
जमा-घटाव-गुणा-भाग

एक संख्या दूसरी से इतना बतियाती है
जैसे अभी-अभी ईजाद हुई हो भाषा

ख़ुदा का शुक्र था
जब हम मिले संवाद कम चुप्पियाँ ज़्यादा बोलती थीं।

उस वक़्त मेरे भीतर

सिर्फ़ कविताएँ थीं
रगों में ख़ून नहीं स्याही दौड़ती थी

और कविताएँ धीरे-धीरे ही सही
हमारे बीच पुल बन गई थीं

उनसे होकर हम आ-जा सकते थे
एक दूसरे के भीतर

कविताएँ तुम भी लिखती थीं
अब नहीं लिखती होओगी

सफ़ेद पड़ चुके हल्के गुलाबी रंग वाली स्मृतियों के साथ
उन्हें भी छोड़ दिया होगा तुमने

जैसे दुर्गम पहाड़ पर चढ़ने से पहले
पर्वतारोही आधार शिविर में छोड़ देता है
अगले सफ़र के लिए ग़ैरज़रूरी हो गया
बहुत-सा सामान।

मुझसे बरस दो बरस उम्र में

छोटा होने के बावजूद
कितना समझदार थीं तुम

जान लिया था कि नहीं जिया जा सकता उसके साथ
जो हमारे बीच

इतना पवित्र था कि प्रेम ही हो सकता था।
सात

तुम्हारा जाना मेरे लिए
गहरी नींद से जगकर आँखें मलने जैसा था

मैंने दुनिया को नई नज़र से देखा
इन दस बरसों में

कठिन अभ्यास से अर्जित की है मैंने
सामने घटित होते हुए को न देख पाने की दृष्टि

सिर्फ़ उन आवाज़ों को पहचानने का हुनर
जो मेरे पक्ष में हैं

या जिन्हें मेरे पक्ष में किया जा सकता है
और भाषा का वह तिलिस्म

जिससे अपनी आत्मा के सिवा
सभी को छला जा सकता है

हो सकता है किसी रोज़
तुम मेरे सामने से गुज़रो

और मैं तुम्हें देखूँ एक अपरिचित मुस्कान के साथ।

प्रदीप सैनी
नई पीढ़ी के कवि

250 रनों का तूफान, चेन्नई की लगातार तीसरी हार

चिन्नास्वामी में बेंगलुरु की धमाकेदार जीत

@ शोभित यादव

रविवार की शाम चिन्नास्वामी स्टेडियम में माहौल कुछ अलग ही था। यह मुकाबला सिर्फ दो टीमों के बीच नहीं, बल्कि भावनाओं और विश्वास की टक्कर भी था। चेन्नई के लिए यह मैच वापसी का मौका था। लगातार दो हार के बाद टीम पर दबाव साफ नजर आ रहा था। वहीं Royal Challengers Bangalore अपने घरेलू मैदान पर जीत की लय को बरकरार रखना चाहती थी। लेकिन जैसे-जैसे खेल आगे बढ़ा, यह मुकाबला एकतरफा होता चला गया और दर्शकों को एक यादगार रात दे गया।

बल्लेबाजी में बेंगलुरु का प्रहार

टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी बेंगलुरु की टीम ने शुरुआत से ही आक्रामक रुख अपनाया। कोहली ने भले ही बड़ी पारी नहीं खेली, लेकिन उनकी उपस्थिति ने पारी को मजबूती दी। इसके बाद साल्ट और देवदत्त ने तेजी से रन जोड़ते हुए पारी को गति दी। देवदत्त ने शानदार अर्धशतक जमाया, वहीं कप्तान पाटिदार ने 48 रनों की जिम्मेदार पारी खेली। दोनों ने मिलकर एक मजबूत आधार तैयार किया, जिस पर आगे बड़ा स्कोर खड़ा किया जा सके।

टिम डेविड का तूफान

इसके बाद मैदान पर जो हुआ, उसने पूरे मुकाबले की दिशा तय कर दी। टिम डेविड ने मात्र 25 गेंदों में 70 रन बनाकर मैच को पूरी तरह बेंगलुरु के पक्ष में कर दिया।उनकी पारी में 8 छक्के शामिल थे। हर छक्का दर्शकों के उत्साह को और बढ़ा रहा था। गेंद बार-बार दर्शक दीर्घा में जा रही थी और चेन्नई के गेंदबाज पूरी तरह दबाव में नजर आ रहे थे।बेंगलुरु की टीम ने निर्धारित ओवरों में 250 रन बनाकर इस सत्र का अब तक का सर्वोच्च स्कोर खड़ा कर दिया।

चेन्नई की संघर्षपूर्ण शुरुआत

250 रनों का लक्ष्य हमेशा चुनौतीपूर्ण होता है, लेकिन चेन्नई जैसी अनुभवी टीम के लिए इसे हासिल करना असंभव नहीं माना जाता।शुरुआत में चेन्नई के बल्लेबाजों ने संभलकर खेलना चाहा, लेकिन लक्ष्य बड़ा होने के कारण उन्हें तेजी से रन बनाने पड़े। प्रशांत वीर ने 43 रन बनाकर पारी को संभालने की कोशिश की इसके बाद ओवरटन ने 37 रनों की तेज पारी खेली। कुछ समय के लिए ऐसा लगा कि चेन्नई मुकाबले में वापसी कर सकती है।

207 रन पर थमी चेन्नई की पारी

लगातार प्रयासों के बावजूद चेन्नई की टीम 207 रन तक ही पहुंच सकी। इस तरह उसे 43 रनों से हार का सामना करना पड़ा। यह उसकी लगातार तीसरी हार रही, जिसने टीम की चिंता को और बढ़ा दिया है। मुकाबला खत्म होने के बाद भी स्टेडियम में दर्शकों का उत्साह कम नहीं हुआ। बेंगलुरु के समर्थक जीत का जश्न मना रहे थे, वहीं चेन्नई के समर्थक भी अपनी टीम के लिए तालियां बजाते नजर आए।यही खेल की असली खूबसूरती है यह केवल जीत और हार का नहीं, बल्कि भावनाओं का खेल है। टीम के बल्लेबाज लय में नजर आ रहे हैं और गेंदबाज भी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं।

गेंदबाजी में बेंगलुरु का दबदबा

लेकिन बेंगलुरु के गेंदबाजों ने सही समय पर विकेट लेकर चेन्नई की उम्मीदों को तोड़ दिया। भुवनेश्वर ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 3 विकेट झटके और चेन्नई की पारी की रीढ़ तोड़ दी।यह उनके लिए भी खास उपलब्धि का दिन रहा, क्योंकि उन्होंने इस मुकाबले में अपने 200 विकेट पूरे कर लिए।इसके अलावा कुणाल और अभिनंदन सिंह ने 2-2 विकेट लेकर चेन्नई को लक्ष्य से दूर कर दिया।

आईपीएल 2026 की शुरुआत में ही सितारों पर चोट का साया

कई बड़े नाम मैदान से दूर

इंडियन प्रीमियर लीग 2026 का रंगारंग आगाज हो चुका है। मैदान पर चौके-छक्कों की गूंज है, दर्शकों में जबरदस्त उत्साह है और हर टीम खिताब की दौड़ में अपनी दावेदारी मजबूत करने में जुटी है। पंजाब, राजस्थान और गत विजेता बेंगलुरु ने शुरुआती मुकाबलों में शानदार खेल दिखाकर अपने इरादे साफ कर दिए हैं। लेकिन इस चमक-धमक के बीच एक सच्चाई ऐसी भी है, जो टीमों और प्रशंसकों दोनों को परेशान कर रही है चोटिल खिलाड़ियों की बढ़ती संख्या।इस बार का सत्र शुरू होने से पहले ही कई बड़े खिलाड़ी चोट या अन्य कारणों से मैदान से दूर हो गए। कुछ खिलाड़ी पूरी तरह बाहर हो चुके हैं, तो कुछ अभी वापसी की राह देख रहे हैं। ऐसे में हर टीम को अपने संयोजन और रणनीति में बदलाव करना पड़ रहा है।

धोनी कब लौटेंगे?: चेन्नई की टीम के लिए सबसे बड़ा सवाल एक ही है महेंद्र सिंह धोनी कब मैदान पर उतरेंगे? टीम के पूर्व कप्तान और अनुभवी खिलाड़ी धोनी चोट के कारण अभी तक एक भी मुकाबला नहीं खेल पाए हैं।मैदान पर उनकी गैरमौजूदगी साफ महसूस हो रही है। दर्शक हर मैच में यही उम्मीद लेकर आते हैं कि शायद आज धोनी खेलते नजर आएं। हालांकि राहत की बात यह है कि वह पूरे सत्र से बाहर नहीं हुए हैं, लेकिन उनकी वापसी कब होगी, यह अभी साफ नहीं है।

कोलकाता को सबसे बड़ा झटका: इस सत्र में अगर किसी टीम को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है, तो वह कोलकाता है। टीम के दो प्रमुख तेज गेंदबाज हर्षित राणा और आकाशदीप चोट के कारण पूरे सत्र से बाहर हो चुके हैं।इसके अलावा मथीशा पाथिराना अभी टीम के साथ नहीं जुड़ पाए हैं, क्योंकि उन्हें अपने देश के क्रिकेट बोर्ड से फिटनेस की मंजूरी नहीं मिली है। ऐसे में कोलकाता की गेंदबाजी काफी कमजोर नजर आ रही है और टीम को नए खिलाड़ियों पर भरोसा करना पड़ रहा है।

बेंगलुरु की तेज गेंदबाजी पर असर: बेंगलुरु की टीम ने भले ही शानदार शुरुआत की हो, लेकिन उसके भी कुछ प्रमुख खिलाड़ी मैदान से दूर हैं। यश दयाल निजी कारणों से पूरे सत्र से बाहर हो गए हैं।वहीं जोश हेजलवुड अभी पूरी तरह फिट नहीं हैं, जिसके कारण शुरुआती मुकाबलों में नहीं खेल पाएंगे। नुवान तुषारा की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है, जिन्हें अभी तक अपने बोर्ड से अनुमति नहीं मिली है।इसके बावजूद बेंगलुरु ने अपने खेल से यह दिखाया है कि उसकी टीम गहराई में मजबूत है।

राजस्थान को बड़ा झटका: राजस्थान के लिए सबसे बड़ा नुकसान ऑलराउंडर सैम कर्रन का बाहर होना है। कमर के पास लगी चोट के कारण वह पूरे सत्र से बाहर हो गए हैं।उनकी जगह दासुन शनाका को टीम में शामिल किया गया है, लेकिन कर्रन जैसी उपयोगिता किसी एक खिलाड़ी से पूरी होना आसान नहीं है।

दिल्ली की परेशानी: दिल्ली की टीम भी चोट और अनुपस्थिति से जूझ रही है। तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क कंधे और कोहनी की चोट से उबर रहे हैं, जिसके कारण वह शुरुआती मुकाबलों में नहीं खेल पाएंगे।वहीं बेन डकेट ने सत्र शुरू होने से पहले ही अपना नाम वापस ले लिया था। इससे दिल्ली के बल्लेबाजी क्रम पर असर पड़ा है।

पांड्या बीमार, युवा खिलाड़ी बाहर: मुंबई की टीम के कप्तान हार्दिक पांड्या बीमारी के कारण एक मुकाबले में नहीं खेल पाए। हालांकि उनकी वापसी की उम्मीद है, लेकिन टीम की लय पर इसका असर पड़ा है।वहीं युवा खिलाड़ी अथर्व अंकोलेकर घुटने की चोट के कारण पूरे सत्र से बाहर हो गए हैं। यह उनके लिए बड़ा झटका है, क्योंकि वह इस बार अपनी पहचान बनाने के करीब थे।

सहारनपुर के मदरसे में 10 साल के बच्चे की पिटाई: जुनैद-शोएब की हरकत और पुलिस का तुरंत जवाब

घटना की शुरुआत और वीडियो का खुलासा

सहारनपुर जिले के गंगोह इलाके में मोहल्ला मोहम्मद गौरी के पास खानपुर गुर्जर गांव की तरफ एक मदरसा है जिसका नाम दारुल उलूम जकरिया है। यहां आसपास के गांवों के बच्चे धार्मिक शिक्षा लेने आते हैं। कुछ समय पहले इस मदरसे में एक 10 साल के बच्चे के साथ जो हुआ वो अब सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो बनकर सामने आ गया है। वीडियो में दिखता है कि एक मौलाना बच्चे को पकड़कर रखता है जबकि दूसरा डंडे से बुरी तरह मारता है। बच्चा चीख रहा है और दर्द से तड़प रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक कुल 36 डंडे पड़े थे और ये सब कुछ 42 सेकंड जैसे कम समय में हुआ। वीडियो करीब छह महीने पुराना है लेकिन हाल ही में शुक्रवार को वायरल हो गया। बच्चा मदरसे में पढ़ने वाला था और आसपास के इलाके का ही रहने वाला था। मां-बाप बच्चों को दीनी तालीम के लिए भेजते हैं ताकि अच्छे संस्कार सीखें लेकिन ऐसी घटना देखकर हर कोई सोच में पड़ जाता है। क्या मदरसा सुरक्षा का ठिकाना होना चाहिए या सिर्फ पढ़ाई का स्थान। बच्चे की उम्र सिर्फ 10 साल है और वो अभी छोटा है। इस उम्र में डंडे की मार से उसका शरीर और मन दोनों को नुकसान पहुंचता है। आसपास के लोग कहते हैं कि मदरसे में कई बच्चे पढ़ते हैं और रोजमर्रा की जिंदगी में ये घटना किसी भी परिवार को झकझोर सकती है। वीडियो में बच्चा बार-बार बचने की कोशिश करता दिखता है लेकिन पकड़ा हुआ है। ये देखकर लगता है कि शिक्षा का नाम लेकर कभी-कभी बच्चों पर ज्यादती हो जाती है। अब ये वीडियो हर किसी के फोन पर घूम रहा है और लोग पूछ रहे हैं कि आखिर क्यों ऐसा हुआ। पुलिस को इसकी सूचना मिली तो उन्होंने तुरंत कदम उठाया। ये घटना सिर्फ एक मदरसे तक सीमित नहीं बल्कि बच्चों की सुरक्षा को लेकर बड़े सवाल खड़े करती है। हर माता-पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा सुरक्षित रहे चाहे वो स्कूल हो या मदरसा।

आरोपी जुनैद और शोएब कौन हैं और उनका दावा

इस घटना में दो मौलाना नामजद हैं जिनके नाम मोहम्मद जुनैद और मोहम्मद शोएब हैं। जुनैद की उम्र करीब 28 से 30 साल है और वो खानपुर गुर्जर गांव का रहने वाला है। शोएब की उम्र करीब 25 से 30 साल है और वो धलापड़ा गांव का रहने वाला है। दोनों मदरसे में शिक्षक थे और बच्चों को पढ़ाते थे। वीडियो में जुनैद डंडे मारता दिख रहा है जबकि शोएब बच्चे को पकड़कर रखता है ताकि वो हिल न सके। पुलिस के पूछताछ में दोनों ने कहा कि बच्चा अक्सर मदरसे से भाग जाता था और कुछ समय बाद वापस आता था। उन्होंने ये भी बताया कि डंडे इसलिए मारे ताकि बच्चा भागने की आदत छोड़ दे। उनका कहना है कि ये अनुशासन सिखाने के लिए था न कि कोई नफरत या गलत इरादा। लेकिन बच्चे की उमर और मार की तीव्रता को देखते हुए ये बात कई लोगों को ठीक नहीं लग रही। दोनों ने ये भी बताया कि वीडियो किसी और शिक्षक ने बनाया था जो बाद में मदरसे छोड़कर चला गया और अब ये वीडियो बाहर आ गया। दोनों खुद को निर्दोष बताते हैं लेकिन कानून के सामने सबूत के आधार पर ही फैसला होता है। जुनैद और शोएब दोनों मदरसे में काम कर रहे थे और आसपास के इलाके से ही थे। लोग कहते हैं कि शिक्षक का काम बच्चों को सही राह दिखाना है लेकिन कभी-कभी गुस्से में सीमा पार हो जाती है। ये घटना हमें याद दिलाती है कि अनुशासन और मारपीट में बड़ा फर्क है। बच्चे को सिखाना है तो प्यार से सिखाएं न कि डंडे से। दोनों आरोपी अब पुलिस की हिरासत में हैं और उनकी बातों की जांच चल रही है। मदरसा चलाने वाले लोग भी इस मामले में शामिल हो सकते हैं क्योंकि पुलिस उन्हें ढूंढ रही है। ये मामला सिर्फ दो लोगों तक नहीं बल्कि पूरे सिस्टम की जिम्मेदारी पर सवाल उठाता है। हर शिक्षक को याद रखना चाहिए कि बच्चा भविष्य का आधार है और उसकी रक्षा करना सबसे बड़ा कर्तव्य है।

वीडियो वायरल होने का असर और लोगों की प्रतिक्रिया

वीडियो शुक्रवार को सोशल मीडिया पर फैलते ही लोगों में गुस्सा और दुख दोनों दिखा। कई लोग शेयर कर रहे थे और कमेंट में लिख रहे थे कि बच्चों के साथ ऐसा नहीं होना चाहिए। वीडियो में बच्चे की चीखें सुनकर कई मां-बाप अपनी आंखों में आंसू रोक नहीं पाए। गंगोह थाने में शिकायत करने वाले कारी साजिद हसन ने बताया कि वो खानपुर गुर्जर गांव के रहने वाले हैं और वीडियो देखकर उन्हें लगा कि ये उनके इलाके का मदरसा है। उन्होंने तुरंत पुलिस को सूचना दी। वीडियो वायरल होने से पहले ये घटना छह महीने पुरानी थी लेकिन अब सबके सामने आ गई है। मदरसे के आसपास रहने वाले लोग कहते हैं कि यहां कई बच्चे पढ़ते हैं और इस घटना से उनका भरोसा डिग गया है। कुछ लोग पूछ रहे हैं कि मदरसों में बच्चों की निगरानी कैसे होनी चाहिए। क्या वहां भी स्कूलों जैसा नियम लागू होना चाहिए जहां मारपीट पर सख्ती है। वीडियो के फैलने से मदरसा बंद हो गया है और पुलिस अब स्टाफ और बच्चों से बात कर रही है। ये घटना सिर्फ सहारनपुर तक सीमित नहीं बल्कि पूरे देश में चर्चा का विषय बन गई। सोशल मीडिया ने इसे तेजी से फैलाया जिससे पुलिस को तुरंत एक्शन लेना पड़ा। लोगों की प्रतिक्रिया से पता चलता है कि आज हर कोई बच्चों के अधिकारों के बारे में जागरूक है। चाहे मदरसा हो या कोई और जगह बच्चों को सुरक्षित रखना जरूरी है। ये वीडियो हमें सोचने पर मजबूर करता है कि शिक्षा का मकसद ज्ञान देना है न कि डराना। कई संगठन और आम लोग अब मांग कर रहे हैं कि ऐसे मामलों में सख्त कानून लागू हों ताकि दोबारा न हो। वायरल होने का एक अच्छा पहलू ये भी है कि अब छुपी घटनाएं सामने आ रही हैं और न्याय की राह खुल रही है। लेकिन साथ ही ये भी ध्यान रखना चाहिए कि बिना जांच के किसी को दोषी न ठहराया जाए। कुल मिलाकर ये घटना समाज को बच्चों की सुरक्षा पर एक नया नजरिया दे रही है।

यूपी पुलिस का तुरंत एक्शन

वीडियो वायरल होते ही गंगोह पुलिस स्टेशन ने तुरंत काम शुरू कर दिया। शनिवार को यानी 4 अप्रैल 2026 को पुलिस ने जुनैद और शोएब दोनों को उनके घरों से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की धारा 115 और 131 के तहत मामला दर्ज किया जो चोट पहुंचाने और हमले से जुड़ी हैं। साथ ही बच्चों से क्रूरता के लिए जुवेनाइल जस्टिस एक्ट की धारा 75 और बच्चों के शिक्षा अधिकार कानून भी लगाया गया। सर्किल ऑफिसर अशोक कुमार सिसोदिया ने बताया कि सोशल मीडिया पर वीडियो देखते ही आरोपी की पहचान कर ली गई और उन्हें फौरन पकड़ लिया गया। दोनों को कानूनी प्रक्रिया के बाद जेल भेज दिया गया। पुलिस अब मदरसा चलाने वालों को भी ढूंढ रही है और बच्चे का बयान दर्ज करना बाकी है। बच्चा अभी भी मदरसे में पढ़ रहा है लेकिन घटना की जांच जारी है। यूपी पुलिस की इस तेज कार्रवाई से लगता है कि कानून हर बच्चे की रक्षा के लिए तैयार है। चाहे घटना पुरानी हो लेकिन वीडियो सामने आते ही एक्शन लिया गया। ये दिखाता है कि सोशल मीडिया अब न्याय की मदद कर रहा है। पुलिस ने कहा कि आरोपी घर से ही पकड़े गए और उनकी बातों की जांच हो रही है। मदरसा बंद होने से पुलिस को स्टाफ और रिकॉर्ड की जानकारी मिल रही है।

बच्चों की सुरक्षा पर विचार

ये घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि बच्चों की शिक्षा कहां और कैसे होनी चाहिए। मदरसा धार्मिक ज्ञान देता है लेकिन वहां भी बच्चों को प्यार और सुरक्षा मिलनी चाहिए। अनुशासन जरूरी है लेकिन मारपीट से नहीं। हर संस्थान चाहे मदरसा हो या स्कूल बच्चों के अधिकारों का ध्यान रखे। मां-बाप को भी बच्चों की निगरानी रखनी चाहिए और मदरसे की गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिए। सरकार और समाज मिलकर ऐसे नियम बना सकते हैं जहां हर शिक्षक को ट्रेनिंग मिले कि बच्चों को कैसे संभालें। ये मामला हमें याद दिलाता है कि बच्चा कमजोर है और उसकी आवाज को सुनना जरूरी है। जुनैद और शोएब की गिरफ्तारी अच्छी बात है लेकिन आगे भी जांच होनी चाहिए ताकि सही सबक मिले। बच्चों की सुरक्षा हर जगह एक जैसी होनी चाहिए चाहे वो शहर हो या गांव। सोशल मीडिया ने इस घटना को उजागर किया लेकिन असली बदलाव तब आएगा जब हर संस्थान खुद जिम्मेदार बने। हम सबको मिलकर बच्चों का भविष्य सुरक्षित बनाना है ताकि ऐसी घटनाएं दोबारा न हों। इस घटना से समाज को ये सीख मिलती है कि छोटी-छोटी बातों पर भी नजर रखें और बच्चों की शिकायत को गंभीरता से लें। अंत में यही कहना होगा कि शिक्षा का मकसद बच्चे को मजबूत बनाना है न कि डराना। पुलिस का एक्शन सही दिशा में है और अब पूरा मामला अदालत में जाएगा जहां सच्चाई निकलेगी। हम सबको उम्मीद है कि भविष्य में बच्चे बिना डरे पढ़ सकें।

ईरान ने बदला खेलः 23 साल बाद अमेरिका का फाइटर जेट गिरा, अब जंग का क्या होगा नया रंग?

शुक्रवार को ईरान के दक्षिण-पश्चिमी इलाके में अमेरिका का एक ताकतवर F-15E स्ट्राइक ईगल लड़ाकू विमान गिर गया। ईरानी सेना ने इसे मार गिराया। विमान में दो क्रू सदस्य थे – पायलट और वेपन सिस्टम ऑफिसर। दोनों ने विमान से बाहर कूद लिया। पायलट को तुरंत बचा लिया गया, लेकिन दूसरे सदस्य की तलाश में दो दिन लग गए। अमेरिकी सेना ने ईरान के अंदर घुसकर उसे भी सुरक्षित निकाल लिया। वह थोड़ा घायल था, लेकिन अब ठीक है। राष्ट्रपति ट्रंप ने खुद सोशल मीडिया पर यह खुशखबरी दी। यह घटना पिछले 23 सालों में पहली बार हुई जब किसी दुश्मन देश ने अमेरिका का लड़ाकू विमान युद्ध में मार गिराया। आखिरी बार 2003 में इराक युद्ध के दौरान ऐसा हुआ था। अभी अमेरिका और इजराइल का ईरान के साथ युद्ध लगभग पांच हफ्ते से चल रहा है। इसमें अमेरिका ने हजारों हमले किए हैं और ईरान की कई सुविधाएं नष्ट कर दी हैं। लेकिन इस बार ईरान ने जवाब दिया।

ईरानी मीडिया ने विमान के टुकड़ों की तस्वीरें भी दिखाईं। अमेरिका कहता है कि उसका बचाव अभियान बहुत मुश्किल था, लेकिन सेना ने अच्छा काम किया। इस घटना से दोनों तरफ की सेनाएं चौकन्नी हो गई हैं। लोग सोच रहे हैं कि क्या अब युद्ध और लंबा खिंचेगा या बातचीत शुरू होगी। ईरान का दावा है कि उसकी मिसाइलों और रडार ने अच्छा काम किया। अमेरिका का कहना है कि यह सिर्फ एक घटना है और उसकी हवाई ताकत अभी भी बहुत मजबूत है। इस युद्ध में अब तक दोनों पक्षों को नुकसान हुआ है, लेकिन कोई बड़ा बदलाव नहीं दिखा था। अब यह गिरा जेट सबको सोचने पर मजबूर कर रहा है।

पुरानी याद ताजा करने वाली घटना

23 साल पहले 2003 में इराक युद्ध के दौरान अमेरिका का एक A-10 विमान दुश्मन की गोली से गिरा था। उसके बाद से अमेरिका ने कई युद्ध लड़े, लेकिन कभी भी उसके लड़ाकू जेट दुश्मन की एयर डिफेंस से नहीं गिरे। ज्यादातर लड़ाइयां आतंकियों या कमजोर देशों के खिलाफ थीं, जिनके पास आधुनिक मिसाइलें नहीं थीं। ईरान के पास हालांकि पुरानी लेकिन मजबूत एयर डिफेंस सिस्टम है। इसमें रूसी S-300 जैसी चीजें और अपनी बनाई मिसाइलें शामिल हैं। अमेरिका ने युद्ध शुरू होने से पहले दावा किया था कि ईरान की सारी एयर डिफेंस नष्ट हो चुकी है।

राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा था कि ईरान अब कुछ नहीं कर सकता। लेकिन शुक्रवार की घटना ने यह बात गलत साबित कर दी। F-15E जैसे आधुनिक जेट को मार गिराना आसान नहीं है। यह दिखाता है कि ईरान अभी भी कुछ हथियार बचा रखा है। युद्ध फरवरी के आखिर में शुरू हुआ था। अमेरिका और इजराइल ने ईरान की मिसाइल फैक्टरियां, नौसेना और न्यूक्लियर साइट्स पर हमले किए। ईरान ने जवाब में मिसाइलें दागीं, लेकिन पहले तो ज्यादा असर नहीं हुआ। अब यह जेट गिरना एक बड़ा संकेत है। विशेषज्ञ कहते हैं कि ईरान ने अपनी रक्षा व्यवस्था को छिपाकर रखा था। अमेरिका के हजारों उड़ान भरने के बावजूद ईरान ने मौका देखकर हमला किया। इससे युद्ध की तस्वीर थोड़ी बदल गई लगती है।

अमेरिकी जेट गिरने की पूरी कहानी

क्या ईरान ने जंग का रुख सच में बदल दिया?

यह घटना युद्ध का रुख बदल सकती है, लेकिन पूरी तरह नहीं। ईरान ने दिखाया कि वह अभी भी लड़ सकता है। 23 साल बाद अमेरिकी जेट गिरना एक बड़ा संदेश है। इससे ईरान को मनोबल मिला और अमेरिका को सतर्क रहना पड़ा। लेकिन विशेषज्ञ कहते हैं कि अमेरिका की कुल ताकत अभी भी बहुत ज्यादा है। उसने ईरान की कई महत्वपूर्ण जगहें नष्ट कर दी हैं। युद्ध पांच हफ्ते से चल रहा है और अमेरिका-इजराइल का दबाव जारी है। ईरान की एयर डिफेंस ने एक बार काम किया, लेकिन पूरी व्यवस्था अभी भी कमजोर है। कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि यह घटना युद्ध को लंबा खींच सकती है। लोग सोच रहे हैं कि क्या अब बातचीत शुरू होगी या और हमले होंगे। ट्रंप सरकार दोनों तरफ संकेत दे रही है। एक तरफ ज्यादा हमले की बात, दूसरी तरफ युद्ध जल्द खत्म करने की। कुल मिलाकर यह घटना सोचने लायक है। यह दिखाती है कि कोई भी युद्ध आसान नहीं होता। दोनों पक्षों को नुकसान हो रहा है। आम लोग चाहते हैं कि जल्द शांति हो। ईरान ने जंग का रंग थोड़ा बदला जरूर है, लेकिन अंतिम फैसला अभी बाकी है। भविष्य में क्या होगा, यह अगले कुछ दिनों पर निर्भर करेगा।

लोग याद कर रहे हैं कि 2003 में भी इराक युद्ध शुरू में आसान लगा था, लेकिन बाद में मुश्किल हो गया था। अब सबकी नजर इस पर है कि ईरान और क्या कर सकता है।

ईरान की एयर डिफेंस सिस्टम अभी भी काम कर रहा

ट्रंप सरकार ने बार-बार कहा कि ईरान की एयर डिफेंस पूरी तरह खत्म हो गई है। उनके रडार 100 प्रतिशत नष्ट हो चुके हैं। लेकिन F-15E जेट गिरने से यह दावा कमजोर पड़ गया। ईरान ने दावा किया कि उसकी मिसाइलों ने जेट को मारा। यह दिखाता है कि ईरान की रक्षा व्यवस्था में अभी भी दम है। ईरान के पास अपनी बनाई खोरदाद-15 और बावर-373 जैसी सिस्टम हैं जो दुश्मन के विमानों को पकड़ सकती हैं। युद्ध के दौरान अमेरिका ने ईरान पर भारी बमबारी की, फिर भी ईरान ने एक मौके पर सही जवाब दिया। इससे पता चलता है कि पूरी एयर डिफेंस फेल नहीं हुई। ईरान ने कहा कि वह अपनी जमीन की रक्षा के लिए तैयार है। वहीं अमेरिका का कहना है कि यह सिर्फ एक सफलता है, लेकिन कुल मिलाकर ईरान कमजोर हो चुका है। युद्ध में ईरान ने कई देशों पर मिसाइलें दागीं, लेकिन ज्यादातर को रोक लिया गया। अब यह जेट घटना से ईरान को थोड़ी ताकत मिली लगती है। लोग सोच रहे हैं कि क्या ईरान की रक्षा व्यवस्था पहले से ज्यादा तैयार थी। विशेषज्ञों का मानना है कि ईरान ने अपनी कुछ मिसाइलें छिपा रखी थीं। ट्रंप ने कहा कि और हमले होंगे, लेकिन अब सावधानी बढ़ गई है। यह घटना दोनों तरफ के सैनिकों के लिए चुनौती है। ईरान की एयर डिफेंस फेल होने की बात अब कम सुनाई दे रही है। इसके बजाय लोग पूछ रहे हैं कि अमेरिका को और सतर्क रहना चाहिए। कुल मिलाकर यह दिखाता है कि युद्ध इतना आसान नहीं जितना लग रहा था।

अमेरिका की मजबूत प्रतिक्रिया और बचाव अभियान

अमेरिका ने जेट गिरते ही तुरंत बचाव अभियान शुरू किया। एक क्रू सदस्य को उसी दिन बचा लिया गया। दूसरे की तलाश में दो दिन लगे। आखिरकार अमेरिकी सेना ने ईरान के अंदर जाकर उसे भी निकाल लिया। राष्ट्रपति ट्रंप ने इसे बड़ी सफलता बताया। उन्होंने कहा कि कोई अमेरिकी सैनिक नहीं मारा गया। यह दिखाता है कि अमेरिका की खोजी और बचाव टीम कितनी सक्षम है। युद्ध में अमेरिका ने 13,000 से ज्यादा उड़ानें भरीं और 12,000 से ज्यादा टारगेट मारे। F-15E जेट गिरना एक झटका जरूर है, लेकिन अमेरिका कहता है कि उसकी हवाई ताकत अभी भी सबसे ऊपर है।

इजराइल के साथ मिलकर वे ईरान की सेना को कमजोर कर रहे हैं। ट्रंप ने ईरान को चेतावनी दी कि और हमले हो सकते हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि युद्ध जल्द खत्म हो सकता है। लेकिन इस घटना के बाद कुछ लोग सोच रहे हैं कि बातचीत का रास्ता खुल सकता है। अमेरिका ने पहले भी कहा था कि ईरान की नौसेना और मिसाइलें नष्ट हो रही हैं। अब इस जेट घटना से थोड़ा दबाव बढ़ा है। फिर भी अमेरिका का बचाव अभियान सफल रहा, जो उसकी ताकत दिखाता है। ईरान ने एक जेट गिराया, लेकिन अमेरिका ने बिना नुकसान के क्रू को बचा लिया। यह दोनों तरफ की कहानी को संतुलित बनाता है। लोग देख रहे हैं कि आगे क्या होता है।

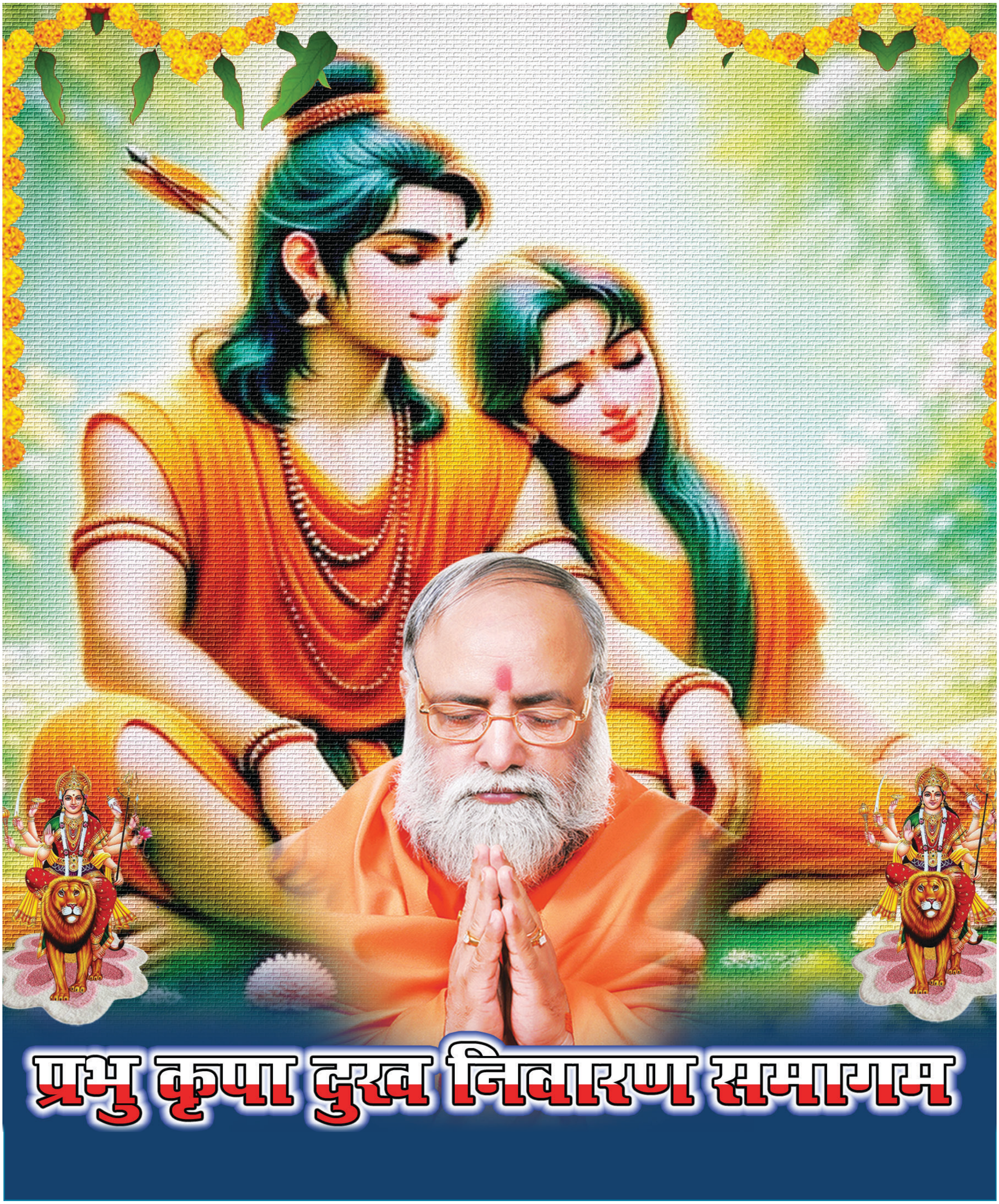
प्रभु कृपा दुख निवारण समागम

BY
Arihanta Industries
ULTIMATE HAIR SOLUTION
• BHRINGRAJ
• AMLA
• REETHA
• SHIKAKAI
100 ML
15 ML
KESH VARDHAK
SHAMPOO
HAIR CLEANSER
Bhringraj, Amla Reetha & Shikakai
100ml
NO
ARITIFICIAL
COLOR
FRAGRANCE
CHEMICAL
KESH VARDAK SHAMPOO
The complete solution of all hair problems:
• Prevent hair fall and make hair follicle strong.
• Promote hair growth.
• Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
• 100% pure ayurvedic shampoo.
• Suitable for all hair types.
ORDER ONLINE @ :
amazon
arihanta.in
Arihanta Industries